॥ श्रीहरिः ॥

अष्टछापीय भक्ति-संगीत

(हवेली-संगीत)

उद्भव और विकास

भाग : ३ : (खण्ड-५)

कलौ केशव-कीर्तनात
अष्टछाप संगीत कलाकेन्द्र
अहमदाबाद

लेखक
कीर्तनाचार्य
पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक
B. Mus. (1st. Class) BhatKhande University
निवृत्त प्रिन्सिपाल, भातखण्डे संगीत विद्यालय, अहमदाबाद
निवृत्त प्राध्यापक-एस. एल. यू. कोलेज फोर विमेन, अहमदाबाद

॥ श्रीहरिः ॥

अष्टछापीय भक्ति-संगीत

(हवेली-संगीत)

उद्भव और विकास

भाग : ३ : (खण्ड-५)

कलौ केशव-कीर्तनात्

अष्टछाप संगीत कलाकेन्द्र
अहमदाबाद

Bhakti Sangeet Udbhav aur Vikas Part 3
20935 PMVS of Canada

पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक
B. Mus. (1st Class), BhatKhande University
निवृत्त प्रिन्सिपाल, भातखण्डे संगीत विद्यालय, अमदावाद
निवृत्त प्राध्यापक-एस. एल. यू. कोलेज फोर विमेन, अमदावाद

प्रकाशक :

चम्पकलाल छ. नायक,
अष्टछाप संगीत कलाकेन्द्र,
६०, नायकनगर, अमदावाद-३८००१४
(गुजरात)

मुद्रणव्यवस्थापक :
म.म., अध्या. के. का. शास्त्री,
विद्यावाचस्पति

प्रथम मुद्रण : प्रति १०००
वि. सं. २०४३, ई. स. १९८७

संशोधित मूल्य रु.

मूल्य : रु. [redacted]
[redacted]
५०-००

मुद्रक :
पूजा प्रिन्टर्स एन्ड ट्रेडर्स,
महंदी कूवा, शाहपुर, अमदावाद

आमुख

पुष्टिमार्गीय कीर्तनों की गानशैली को स्वरांकित करने का सर्वप्रथम प्रयास, जहाँ तक मुझे ज्ञात है, श्री चम्पकलाल नायक ने ही बहुत वर्षों पहले किया था । उसके बाद तो शनैः शनैः कुछ ग्रन्थ पुष्टिमार्गीय स्वरलिपियों के प्रकाशित हुए ।

सम्पूर्ण पुष्टिजगत् इन स्वरलिपिकारों का चिरकाल तक ऋणी रहेगा । फिर भी पुष्टिमार्गीय कीर्तनशैली की ऐतिहासिक-शैलीगत-रागों के भेदोपभेद आदि के निरूपण से समृद्ध जैसी सांगोपांग विवेचना श्री चम्पकलालभाई ने की है, उसका उदाहरण अन्यत्र दुर्लभ है ।

कीर्तनशैली एक जीवित परम्परा है और प्रत्येक जीवित परम्परा में तत्तत्स्थानीय, तत्तत्कालिक एवं परम्परावाहक तत्तद् व्यक्ति से जुड़ी हुई कुछ-न-कुछ विशेषताएं तो जुड़ ही जाती हैं, जैसे महा नदी में उपनदियाँ । इन सभी भेद-उपभेदों के सहिष्णु एक अभेद का जो अनुभव नहीं कर पाता उसे जीवित-परम्परा का वास्तविक रसास्वादन नहीं मिल पाता । अतएव गोकुल-कामवन, नाथद्वारा-कांकरोली, गुजरात आदि स्थानों में परिलक्षित होती कीर्तनशैलियों के स्वरलिपिकरण द्वारा उनकी सुरक्षा सम्प्रदाय की एक महती सेवा है ।

रामजयन्ती

व्रजकमल, स्वस्तिक सोसायटी,
चौथा रास्ता, जुहू स्कीम,
बम्बई-४०००५६

गो. श्याममनोहर

चिन्तासंतानहन्तारो यत्पादाम्बुजरेणवः ।
स्वीयानां तान्निजाचार्यान्प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥

नि. ली. कांकरोलीस्थित तृतीयपीठाधीश्वर
आ. श्री १०८ श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज
के

चरणों में

चरणकिंकर
चम्पकलाल छ. नायक

તૃતીય પીઠાધીશ્વર, કાંકરોલી.

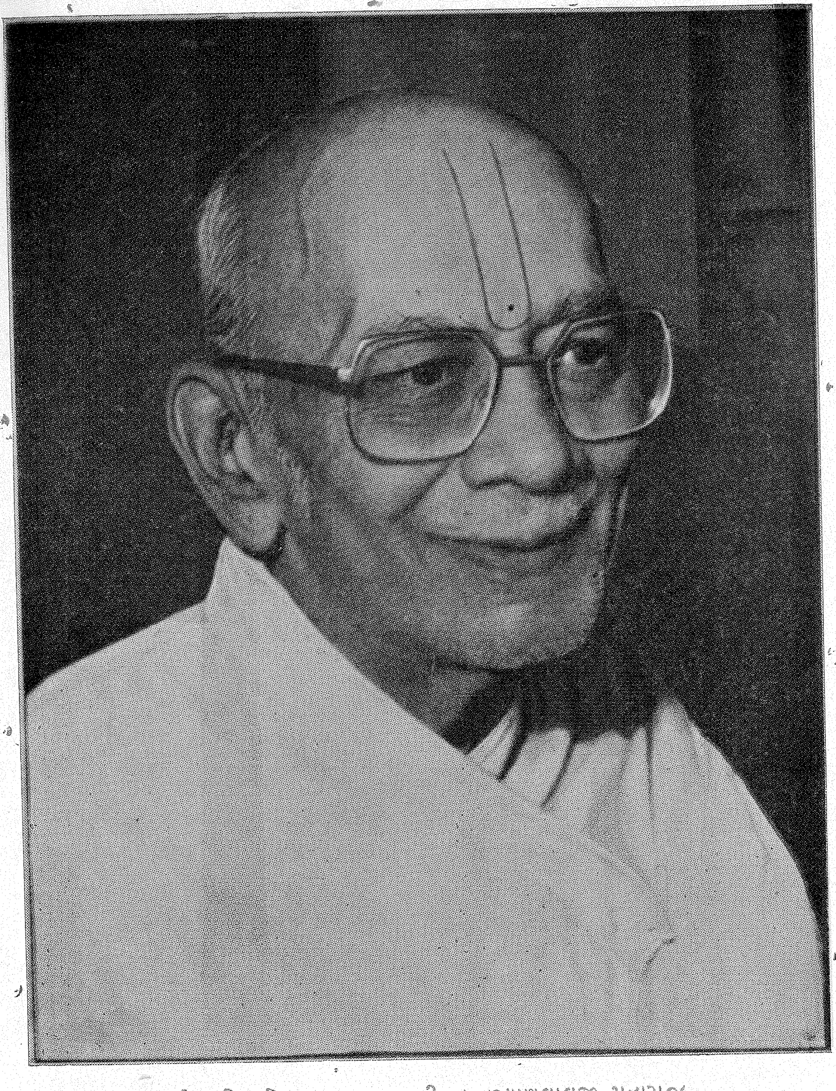

નિ. લિ. ગો. ૧૦૮ પૂ. શ્રી વ્રજભૂષણલાલજી મહારાજ

ग्रंथकार के पिताश्री छबीलदास मोरारजी नायक

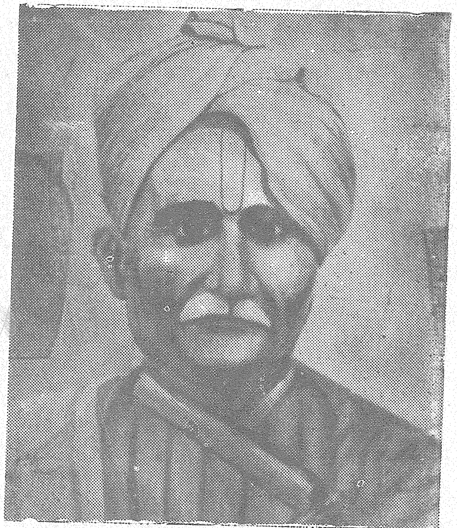

पुष्टि संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कीर्तनकार व श्रीमंत सरकार दामाजीराव गाइकवाड की पाटण की गद्दी के गायक ।

जन्म० सं० १९३२
गो० सं० २००१

संगीतोद्धारक पं० भातखण्डेजी के पट्टशिष्य व ग्रंथकार के संगीत विद्यागुरु संगीताचार्य पंडित वाडीलाल शिवराम नायक

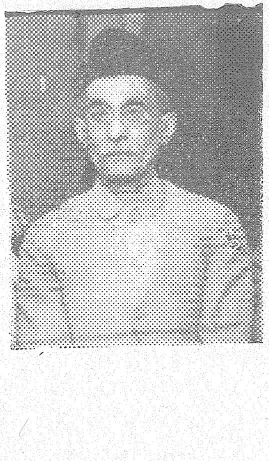

जिनके संबंध में पं. भारखण्डेजी का अमर कथन है–"मैं ऐसा कुछ नहीं जानता जो मैंने वाडीलाल को सिखाया न हो ।"

जन्म-सं० १९३८
गो० सं० २००३

अखिल भारतीय पुष्टि मार्गीय कीर्तन संगीत संमेलन, अहमदावाद–१९५५

बाँये से दाँये बैठे हुए : १. श्री लक्ष्मणप्रसादजी चतुर्वेदी; २. सेठ जमनादास जरीवाला; ३. श्री शिवकुमारजी चतुर्वेदी; ४. श्री गोविन्दरामजी बुरहानपुरकर; (५) श्री मन्नालालजी मुखियाजी (कांकरोली), ६. श्री चंपकलालजी नायक, ७. श्री पुरुषोत्तमजी पखावजी (नाथद्वारा); ८. श्री भगवती प्रसादजी (धांग्रधा.)

चित्रपरिचय

पं. श्री चम्पकलालजी को विचार आया कि पुष्टिमार्गीय संगीत-परम्परा से गानेवाले व्यवसायी एवं अव्यवसायी कीर्तनकार अदृश्य होते जा रहे हैं। जो विद्यमान हैं उनको एकट्ठा किया जाय और एक मञ्च पर लाकर उनकी विद्या का परिचय सुलभ होना चाहिये। इस विचार को मूर्त करने का उन्होंने यह सम्मेलन करके प्रयास किया था।

यहाँ सामने अमदावाद के भारतभुवन थियेटर में सन १९५५ में "पुष्टिमार्गीय संगीत–सम्मेलन" हुआ था उसमें जिन महानुभावों ने आ कर प्रत्यक्ष योगदान दिया था उन सबों का दर्शन इस चित्र में सुलभ हो रहा है। सबों के नाम तो यहाँ दिये जाते नहीं हैं। जो प्रमुख थे और अगली पंक्ति में बैठे हैं उनके नाम इस प्रकार हैं।

वाईं ओर से १. श्री लक्ष्मणप्रसाद चौबे, २. श्री जमनादासजी जरीवाला, ३. श्री शिवकुमारजी चौबे, ४. श्री गोविन्दरावजी बरहानपुरकर–पखवाजी, ५. श्री मन्नालालजी कीर्तन–मुखियाजी, ६. पं. चम्पकलालजी नायक, ७. श्री पुरुषोत्तमजी पखवाजी ८. श्री भगवतीप्रसादजी भट्ट

तदुपरान्त अमदावाद–बड़ेमन्दिर के कीर्तनकार श्री चुनीलालजी, सूरमण्डल के निष्णात श्री बाबूभाई (नासिक), श्री पुरुषोत्तमदास गान्धर्व, श्रीकृष्णदासजी पखवाजी (बुरहानपुर), इत्यादि तथा अन्य कलाकार भी पिछली पंक्तिमें।

प्रास्ताविक

ई. स. सोलहवीं शती के आरम्भ से ले कर ई. स. १९५० तक के ४५० वर्षों में पुष्टिमार्गीय संगीत का जो विकास हुआ वह इन तीनों ग्रन्थों में पं. चम्पकलालजी नायकने दे दिया है ।

इस तृतीय ग्रन्थ से पं. चम्पकलालजी नायकने 'अष्टछापीय भक्ति-संगीत–उद्भव और विकास' के विषय में लिखने की जो प्रतिज्ञा की थी वह पूर्ण होती है । इस तृतीय ग्रन्थ की अपनीं निजी विशिष्टता है । इस ग्रन्थ में पुष्टिमार्गीय मन्दिरों में गाये जाते पदों में द्वितीय ग्रन्थ में जो बाकी रह गये थे उस विषय में लोगों की मांग आने के कारण वैसे करीब पचास पद स्वरलिपि के साथ दिये गये हैं । वह तो एक बात हुई । विशिष्टता यह है कि दिये गये प्रत्येक पद की स्वरलिपि देने के बाद उसी बन्दिश और समान स्वरूप में गाये जाने वाले करीब २५० पदों की प्रथम पंक्ति वहां वहां दी गई है । इसका लाभ है कि कीर्तनगायकों को समान पद्धति के अन्य गाये जाने वाले सभी पदों की गेयता आसान बन जाती है। यह कार्य आज तक हुआ ही नहीं था इस कारण पं. नायक को जितने धन्यवाद दिये जायँ इतने कम हैं ।

इस ग्रन्थ को पं. नायकजी ने आखिर में ८ जितने परिशिष्ट दे कर पूर्ण किया है। परिशिष्ट–१ में उन्होंने अष्टछापीय कीर्तनगान और साहित्य का संक्षेप में परिचय दे कर कवि एवं कीर्तनकारों की सूची में श्रीमहाप्रभुजी के १९ एवं श्रीगुसांईजी के २१ शिष्य गायकों का समावेश किया है । परिशिष्ट–२ में हवेली–संगीत का अभ्यास करनेवालों के लिए आवश्यक जानकारी बताई गई है । परिशिष्ट–३ में ढाढीलीला एवं जोगीलीला का परिचय दिया है। परिशिष्ट–४ में नित्यपद, वर्षोत्सव के पद एवं वसन्त–धमार के पदों के क्रमशः तीन

ग्रन्थ सम्प्रदाय में प्रचलित हैं उस विषय में जानकारी दी है। परिशिष्ट–५ में (१) नटनारायण का पद रह गया था वह स्वरलिपि के साथ बताया है और (२) अष्टछापीय कीर्तनसंगीत–परम्परा में ७४ प्रचलित रागों का अर्वाचीन दृष्टि में १० थाटों में जो विभागीकरण प्रचलित बना है वह बताया गया है।

परिशिष्ट–६ पुष्टिमार्गीय द्रुपदगान क्या है यह विस्तार से बताता है। यह परम्परा मात्र पुष्टिमार्गीय मन्दिरों की ही विशिष्टता है।

परिशिष्ट–७ में संगीत सम्प्रदाय में कौनसा है वह बताने के साथ साथ 'धोळ–गान' का स्वरूप क्या है वह बताया गया है। यह हवेली–संगीत का विषय नहीं है यह स्पष्ट रूप में कहा है।

यहां बीचमें पूर्वप्रसिद्ध ग्रन्थ दूसरे का शुद्धिपत्र दिया गया है, बाद में परिशिष्ट–८ है, जिसमें पदों में प्राप्त व्रजभाषा के कठिन शब्दों के गुजराती हिन्दी पर्याय दिये हैं।

आखिर में परिशिष्ट–९ दिया है, जिसमें पखवाज (मृदंग) के तालों का परिचय दिया गया है। वस्तुतः सम्प्रदाय में कीर्तनों के साथ पखवाज का ही प्राधान्य है, तबलों का नहीं। दोनों के ठेकों में भी अन्तर है। गम्भीरता मात्र पखवाज में है। इसके तालों के ठेके से उसका परिचय सुलभ होता है। पं. नायकजी ने बचपन में पखवाज के जिन तालों का अध्ययन किया था वे ही ये ताल हैं। पिताजीने एवं श्री पूंजीरामजी ने इन्हीं तालों का ज्ञान आवश्यक गिना था यह नोंधपात्र बात है।

मैं समझता हूँ कि कीर्तन सीखने वालों के लिए एवं शोध करने वालों के लिए जो कुछ भी जरूरी है वह सब देने का इन ग्रन्थों में पं. नायकजी का प्रयत्न है।

केशवराम का. शास्त्री

अमदावाद–३८०००६
दि. ५–५–१९८७

⁂

कीर्तनाचार्य और संगीताचार्य पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक का

जीवन-परिचय

ले. डा. चीनुभाई ज. नायक : अनु. डा. हरगोविन्द चं. नायक

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में संगीत का अर्थ है गायन, वादन और नृत्य का समुच्चय। तीनों कलाएं परस्पर का आधार ले कर विकसित हुई हैं। इन तीनों कलाओं के साथ जिस जाति का जन्मजात सम्बन्ध है और जो इन कलाओं के प्रदर्शन में अत्यन्त कुशल है उस नायक-भोजक समवाय के संगीताचार्य पं. चम्पकलाल छबीलदास नायक इस परम्परा के एक अनमोल रत्न हैं। उनकी कौटुम्बिक परम्परा में भक्ति-संगीत विरासत के रूप में चला आ रहा है।

कौटुम्बिक परम्परा :

चम्पकलालजी का जन्म उत्तर गुजरात के महेसाना जिले के पाटन नगर में १९ अप्रेल १९०९ के दिन हुआ था। पिता का नाम छबीलदास और माता का नाम रेवाबेन था। उनका परिवार वैष्णवी दीक्षा से सम्पन्न था। उनके चाचा हीराचन्द कीर्तनिया थे। पाटनस्थित श्रीद्वारकानाथजी के मन्दिर में वे भक्ति-संकीर्तन किया करते थे। चम्पकलालजी ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा छठी (आज की नवीं) कक्षा तक की पाटन में ही प्राप्त की। बचपन से ही वे अपने पिताजी के साथ मन्दिर में जाया करते थे और संगीत के संस्कार पाते रहते थे। छः वर्ष की छोटी-सी उम्र से ही उन्होंने सारंगी के साथ सूर भरना शुरू कर दिया था। पाटन के श्रीद्वारकानाथजी के उस मन्दिर में अमदावाद, कांकरोली और अन्य वैष्णवपीठों के आचार्य पधारते थे वे छबीलदास की कीर्तनकला और संगीतकला

से प्रभावित होकर अपने मन्दिरों में प्रसंगानुसार उन्हें निमन्त्रित भी करते थे । छबीलदासजी की आवाज बुलन्द और सूरीली थी । किशोर चम्पकलाल अपने पिताजी के साथ मन्दिर में मृदंगवादन कर सके इसी लिए उनकी तालीम के लिए उसी समय दरमियान पूंजीराम उस्ताद को एक वर्ष के लिए मन्दिर की ओर से नियुक्त किया गया । इस तालीम के पश्चात् वि. सं. १९७६ (ई. स. १९२०) में एक पखवाजी के रूप में मन्दिर की सेवा में चम्पकलालजी को लिया गया था । गोपाल नायक–घराने के उस्ताद श्री मणिलालजी से उन्होंने गायकी की तालीम प्राप्त की थी ।

अपने राज्य में संगीतकला के प्रोत्साहन के निमित्त बड़ौदा राज्य के महाराजा श्रीमन्त सयाजीराव गायकवाड़ ने राज्य के चार नगरों में संगीतशालाएं प्रारम्भ कीं, जिनमें से एक पाटन में थी । इन संगीतशालाओं पर निगरानी रखने की जिम्मेवारी उस्ताद मौलाबक्ष को सौंपी गई थी । ग्यारह वर्ष की उम्र में चम्पकलालजी इस संगीतशाला में दाखिल हुए और तीन वर्षों तक संगीत की तालीम ले कर मध्यमा की परीक्षा उत्तीर्ण की । अपने पिताजी के साथ चम्पकलालजी को समय–समय पर श्रीनाथद्वारा, कांकरोली आदि तीर्थों में जाने का अवसर मिलता रहता था और इस प्रकार वैष्णव कीर्तनकारों के परिचय में आना होता रहता था ।

संगीतशाला में प्राप्त तालीम, वैष्णव कीर्तनकारों का संगीत, परम्परागत संगीत और अन्य मन्दिरों में कीर्तनकारों के कण्ठों से गाये जाने वाले कीर्तनों में जो अन्तर दिखाई पड़ता था उसके प्रति संशोधनात्मक वृत्ति का अभिगम चम्पकलालजी में बचपन से ही अंकुरित हो गया था ।

चम्पकलालजी का प्रथम ब्याह राधनपुर के आश्रित संगीतकार श्री भाईलाल त्रिभोवनदास नायक की सुपुत्री अदिति(आन्नदी) के साथ

वि.सं. १९८३ (ई.स. १९२७) में हुआ था । अपनी प्रथम पत्नी से तीन सन्तानें—हसुबेन, बालकृष्ण और रमेशचन्द्र—हुईं । प्रथम पत्नी के निधन के पश्चात् भावनगर के सुप्रसिद्ध राजगायक श्री दलसुखराम वस्ताराम भोजक की पौत्री प्रसन्नबेन के साथ वि.सं. १९९८ (ई.स. १९४२) में लग्न सम्पन्न हुआ । इनसे पांच सन्तानें–घनश्याम, जगदीश, भानुमती, प्रवीणा और हेमांगिनी–हुईं ।

चम्पकलालजी ने वि.सं. १९७४ (ई.स. १९१८) से वि. सं. १९८३ (ई.स. १९२७) तक पाटन के श्रीद्वारकाधीशजी के मन्दिर में पखवाजी के रूप में सेवाएँ दीं । तत्पश्चात् वि. सं. १९८४ (ई.स. १९२८) से वि.सं. १९८६ (ई.स. १९३०) तक महेसाना और विसनगर के श्रीद्वारकानाथजी के मन्दिरों में तथा लालीबा के मन्दिर, बम्बई में कीर्तनिया के रूप में सेवाएं दीं । उसके बाद वे अमदावाद में स्थिर हुए । अमदावाद के रायपुर चकला में आये हुए श्रीद्वारकानाथजी के मन्दिर में कीर्तनिया के रूप में नियुक्त किये गये । वि.सं. १९९२ (सन १९३६) में वे साबरकांठा के मोड़ासा हाईस्कूल में पूरे समय के संगीतशिक्षक के रूप में नियुक्त हुए । यहाँ लगभग दो वर्षों तक कार्य कर के पुनः अमदावाद आये और अमदावाद की खानगी प्राथमिक शालाओं में खण्ड–समय के शिक्षक के रूप में सेवा देनी प्रारम्भ की । सात वर्षों के पश्चात् वि.सं. १९९९ (सन. १९४३) में वे कांकरोली के श्रीद्वारकेश संगीत विद्यालय में प्रधानाध्यापक के रूप में लगे । यहाँ तीन वर्षों तक कार्य किया । पुनः वे अमदावाद आये और वि.सं. २००२ (सन. १९४६) में श्रीमती लीनाबेन मंगळदास के होम स्कूल में खण्ड–समय के संगीतशिक्षक के रूप में नियुक्त हुए । इस के पूर्व सन १९१७ से वे पं. वाडीलाल शिवराम नायक से भातखण्डे–पद्धति का अभ्यास करते रहे । उनका यह अभ्यास सात वर्षों तक चलता रहा । पण्डितजी से उनका योग कराने वाले प्रो. रसिकलाल छो. परीख थे ।

सर्वश्री पण्डित वाडीलाल शिवराम, रसिकलाल छो. परीख, जयशंकर "सुन्दरी," गीताबेन मायोर, पण्डित के. का शास्त्री, डा. मच्छर और आचार्य श्री एम. एस. पण्डित की प्रेरणा से चम्पकलालजी को यह विचार आया कि भातखण्डे–संगीत–पद्धति की तालीम देने वाला एक विद्यालय होना चाहिए। ई.स. १९४८ में इस विचार को मूर्त रूप मिला और अमदावाद में प्रार्थनासमाज, रायखड़ में "भातखण्डे संगीत महाविद्यालय" का प्रारम्भ हुआ। भारतीय संसद् के प्रथम स्पीकर दादा साहब गणेश वासुदेव मावळंकर की अध्यक्षता में और भातखण्डेजी के शिष्य पण्डित एस. एम. रातांजनकर के शुभ हाथों विद्यालय का उद्घाटन हुआ। विद्यालय के प्रारम्भ में २५ विद्यार्थी थे और बम्बई राज्य के शिक्षा–विभाग की ओर से संस्था को मान्यता भी प्राप्त हुई थी। यह महाविद्यालय १२ वर्षों तक चला। किन्तु शिक्षार्थियों की संख्या कम हो जाने के कारण विवश हो कर इसकी प्रवृत्ति बन्द करनी पड़ी। इसके पश्चात् एस. एल. यू. महिला कालेज में खण्ड–समय के संगीत–शिक्षक के रूप में ई.स. १९६७ तक सेवाएँ दीं। एस. एन. डी. टी. युनिवर्सिटी की स्नातक–कक्षा तक संगीत परीक्षक के रूप में नियुक्त होते रहते थे। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद (प्रयाग) संगीतसमिति की ओर से भी परीक्षक के रूप में उनकी नियुक्ति होती रहती थी। महिला कालेज गुजरात युनिवर्सिटी के साथ संलग्न हो जाने के बाद वे उसकी सेवा में से निवृत्त हो गये।

ई.स. १९४० से आकाशवाणी–अमदावाद से वे प्रायः हवेली–संगीत के कार्यक्रम देते रहे हैं।

ई.स. १९५५ में अमदावाद में भारतभुवन थियेटर में पुष्टिमार्गीय सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें चम्पकलालजी ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इसके लिए उन्हें शिल्ड अर्पित किया गया था।

ई.स. १९६५ में पोरबन्दर के गो. श्री माधवरायजी महाराजश्री के द्वारा दिग्दर्शित "गोविन्दस्वामी" चलचित्र में चम्पकलालजी ने मोगल

सम्राट अकबर की भूमिका की और गो. श्री रसिकरायजी के साथ इसके संगीत का दिग्दर्शन भी किया। यह चलचित्र वैष्णव समाज में पर्याप्त समादर प्राप्त कर चुका है।

पं. चम्पकलालजी के जीवन में सर्वश्री रसिकलाल छो. परीख, जयशंकर "सुन्दरी" और पं. वाडीलाल शिवराम नायक के परिचय ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इस परिचय के निमित्त पं. केशवराम का. शास्त्री थे। चम्पकलालजी के पिता श्री छबीलदास और पं. श्री केशवराम के पिताश्री आचार्य काशीराम शास्त्री, दोनों कीर्तनिया होने के कारण, समय-समय पर परिचय में आते रहते थे। यह परिचय धीरे-धीरे घनिष्ठ हुआ। इस समय दरमियान चम्पकलालजी की प्रथम पुस्तक "संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन" गुजराती में वि.सं. १९९१ (ई.स. १९३५) में प्रकाशित हुई। श्री रसिकभाई को यह प्रकाशन अत्यन्त पसन्द आया।

शैक्षणिक सिद्धियाँ :

चम्पकलालजी ने माध्यमिक कक्षा ६ (आजकी कक्षा ९) तक अभ्यास किया था। किंतु संगीत के सम्बन्ध में कौटुम्बिक परम्परा को सुरक्षित रखते हुए अपने पिताजी तथा वैष्णव आचार्यों की प्रेरणा से स्वपुरुषार्थ से 'बी. म्युजिक' की उपाधि भातखण्डे युनिवर्सिटी आफ इण्डियन म्युजिक, लखनौ से प्रथम वर्ग में ई.स. १९४४ में प्राप्त की थी। इसके पूर्व बड़ौदा कालेज से १९४० में संगीत-डिप्लोमा प्राप्त किया था। चम्पकलालजी की भक्ति-संगीत-साधना से प्रभावित होकर कांकरोली के महाराजश्री ने उन्हें "संगीत-कीर्तनाचार्य" का बिरुद ई.स. १९४८ में प्रदान किया था। वैष्णव आचार्यों और कई सामाजिक संस्थाओं के द्वारा श्री चम्पकलाल का बहुमान किया गया है जिनमें "रोटरी क्लब आफ अमदावाद", "श्री सयाजीराव गायकवाड़ हीरक महोत्सव समिति", "वैष्णव समाज, अमदावाद", "श्री त्रागाळा भोजक हितवर्धक समाज. अमदावाद," "श्री समस्त नायक भोजक केळवणी

मंडळ, महेसाना," "वैष्णवसभा, अमदावाद," अमदाबाद के श्री व्रजरायजी महाराज, सुरत के गोस्वामी श्रीव्रजरत्नलालजी महाराज, अमदावाद के संगीतप्रेमी नागरिकों की ओर से संगीताचार्य राजाभैया पूछवाले, पद्मश्री डा. एस. एम. रातांजनकर, "पुष्टिपराग विहार, सिहोर" आदि उल्लेखनीय हैं ।

उन्होंने बीस के लगभल अमूल्य ग्रन्थ गुजरात के संगीतसमाज तथा वैष्णवसमाज को प्रदान किये हैं । इन ग्रन्थों की सूची इस ग्रंथ में अलग से प्रकाशित की गई है ।

अपनी ढलती हुई उम्र में भी "अष्टछापीय भक्तिसंगीत" के तीन भागों (पांच खण्डों) का प्रकाशन उनकी संगीतसाधना तथा पुष्टिमार्गीय भक्ति संगीत के प्रति उनके प्रेम और आदर का सूचक है । अभी भी "भारतना हवेली संगीतमां गुजरातनुं प्रदान" ("भारत के हवेली-संगीत में गुजरात का प्रदान) विषय की संशोधनात्मक ग्रन्थ–योजना की अभीप्सा है । इसके अतिरिक्त "गुजराती नाटकोनां गीतोनी सरगम–भा. २" की हस्तप्रत आपके पास तैयार है, जिसे प्रकाशित करने की भी योजना है ।

चम्पकलालजी अपने ७८ वर्ष पूरे कर ७९ वें वर्ष में प्रवेश कर चुके हैं । आँखों की रोशनी ने भी प्रायः जवाब दे दिया है, फिर भी स्मृति इतनी सचेष्ट और सतेज है कि यदि योग्य सहायक और प्रोत्साहक मिल जायँ तो उक्त योजनाओं के सम्बन्ध में आपका उत्साह आज भी बुलन्द है । श्रीमहाप्रभुजी की कृपा से आपकी यह इच्छा परिपूर्ण हो ऐसी शुभ कामना के साथ निरामय दीर्घायु की मंगल कामना । (डा. चीनुभाई नायक ने यह लेखन गुजराती भाषा में किया था । डा. हरगोविन्द नायक ने इसका हिन्दी अनुवाद करके अपनी सेवा दी, जो धन्यवादार्ह है ।)

* * *

दो शब्द

भारतीय संगीत में “शिष्ट संगीत” और “लोक-संगीत” ऐसे दो प्रकारों की धाराएँ प्रारम्भ से ही बहती आई हैं। भारतवर्ष में प्रारम्भ से ही धर्म ही संगीत के प्राण तथा संगीत ही धर्म की वाणी मानी जाती रही है। इस तथ्य का नियमबद्ध पालन पुष्टि-सम्प्रदाय में यथाशक्ति देखा जाता है। सम्प्रदाय के उद्गम के साथ ही भगवत्सेवाक्रम के साथ तद्रूप हुए संगीत को अष्टछाप की या अष्टछापपरम्पराप्राप्त भक्त कविवरों की अनुभववाणी कहें या शास्त्रीय संगीत या हवेली-संगीत कहें, यह सब भारतीय संगीत में आधार-रूप ऐसा “शिष्ट संगीत” ही है। यह सुप्रसिद्ध है कि सम्प्रदाय ने इसमें अमूल्य एवं अखूट प्रदान किया है।

पुष्टिसम्प्रदाय की सेवाप्रणाली जितनी भावात्मक है इतनी ही वेदोक्त भी है। सेवाप्रणाली के मुख्य अंग संगीत, सामग्री और शृंगार–शोभन माने गये हैं। “यथा देहे तथा देवे” के स्थूल सिद्धान्त का पालन इसी सम्प्रदाय में यथार्थ रूप से पाया जाता है।

आयुर्वेद तथा गान्धर्ववेद को लक्ष्य में रख कर सेवाप्रणाली का अनोखा सर्जन किया गया है। जैसे वर्षभर की ऋतुओं के अनुसार संगीत सामग्री तथा वेशभूषा आदि का जो विनियोग किया गया है वह अन्य सम्प्रदायों से अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इसी कारण सम्प्रदाय की राग, भोग, शृंगार आदि ललित कलाओं के प्रवर्त्तन में अग्रस्थान आ. श्रीवल्लभाचार्यजी के सुपुत्र एवं द्वितीय आचार्य

गो. श्री. विट्ठलनाथजी का तथा इसके प्रचलन में आपके सात बालकों आदि प्राचीन गोस्वामियों का श्रेय माना जाता है ।

परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है । इस जगत् में अस्तित्व रखने वाली प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन आता रहता है । मानव-जाति के इतिहास में धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, लोक-कलाओं तथा भौगोलिक, प्राकृतिक सभी प्रक्रियाओं में परिवर्तन आते रहे हैं तदनुसार साम्प्रदायिक संगीतप्रणाली में भी परिवर्तन का आ जाना स्वाभाविक है ।

श्रीनाथजी के मेवाड़ पधारने के पूर्व तक सभी सेवकगण एवं वैष्णवसमाज सम्प्रदाय की उपर्युक्त सेवाप्रणाली के अनुसार सेवा में तत्पर रहते थे ।

किन्तु श्रीनाथजी के मेवाड़ पधारने के पश्चात् समय की गति के साथ-साथ काल के प्रभाव से सम्प्रदाय की परम्परागत सेवाप्रणाली के आचरण में क्रमशः परिवर्तन होता रहा । फलतः परम्परा के अग्रगण्य कीर्तनकारों की संख्या क्रमशः कम होती चली । सिखाने वालों की कमी के साथ परम्परागत कीर्तनशैली के प्रति वैष्णवों की रुचि कम होती रही और उसके स्थान पर उस कालमें प्रचलित खयाल, ठुमरी आदि का प्रयोग बढ़ता रहा ।

साम्प्रदायिक शुद्ध शास्त्रीय कीर्तनशैली के सीखने-सिखाने वालों की कमी होने के कारण संगीत की प्राचीन गुरुमुखी विद्या भी लुप्त हो गयी ।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है तदनुसार प्राचीन गुरुमुख संगीतपरम्परा में भी परिवर्तन आ गया ।

आधुनिक विज्ञानयुग में विद्या, कला, हुन्नर इत्यादि सभी क्षेत्रों में प्राचीन शिक्षणपद्धति के स्थान पर निष्णात संशोधनकारों ने जो नयी

शिक्षा-पद्धति अपनाई है और अपना रहे हैं इसका देशभर में स्वीकार हो चुका है। यह नई पद्धति साधन, समय, सरलता और आर्थिक दृष्टिसे इस युग में आशीर्वाद्-समान मानी जायगी।

संगीतकला के विषय में देखा जाय तो संगीत की गायन वादन कला का जितना प्रचार और जानकारी समाज में दृष्टिगत होती है उसकी तुलना में ४०-५० वर्षों पहले केवल व्यवसायी समाज के तथा कुछ शिष्ट समाज के गृहस्थों में ही इसकी जानकारी थी।

आधुनिक युग में समाज में भी संगीत की विशेष जानकारी का श्रेय संगीत की थाट पद्धति एवं स्वरलिपिबद्ध इस नूतन शिक्षाप्रणाली को है।

इस नूतन स्वरलिपिबद्ध शिक्षापद्धति का भारतवर्ष में सबसे प्रथम आरम्भ प्राचीन बड़ौदा राज्य के श्रीमन्त सयाजीराव महाराज के प्रथम राज्यगायक मौलाबक्षजी द्वारा किया गया। इसके पश्चात् पं. आदित्यरामजी (जामनगर), पं. डाह्यालाल शिवराम (भावनगर) आदि पण्डितों ने इस नयी पद्धति में प्रारम्भिक कार्य किया।

इसके पश्चात् इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य विष्णुद्वय (पं. विष्णु नारायण भातखण्डे और पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर) ने किया है।

यदि चालू शती में संगीतोद्धारक विष्णुद्वय द्वारा थाटपद्धति एवं स्वरलिपि की नयी शिक्षापद्धति का प्रचारक और प्रसार न होता तो प्राचीन घरानों की परम्परागत हजारों चीजों की रागतालबद्ध बन्दिशों के दर्शन दुर्लभ हो जाते। यही नहीं सेंकड़ों नगरों में सेंकड़ों संगीतशालाओं द्वारा हजारों विद्यार्थियों तक जानकारी का जो प्रवाह आज देशभर में पहुंच रहा है वह कदापि सम्भव न होता।

इसी उद्देश्य को लक्ष्य में रख कर, जिस समय हमारे मन्दिरों में अष्टछापीय परम्परागत संगीत लुप्त हो रहा है उस समय इस प्रकार के सेंकड़ों कीर्तनपदों की रागतालबद्ध बन्दिशों को स्वरलिपिबद्ध

करना जरूरी है । इससे न केवल वैष्णवसमाज, किन्तु संगीतक्षेत्र के जानकार महानुभाव भविष्य में भी इससे लाभान्वित होंगे ।

“अष्टछापीय भक्तिसंगीत” के पूर्व प्रकाशित दो ग्रन्थों के सम्बन्ध में पू. पा. गोस्वामी महाराजों, विद्वानों, संगीत के मर्मज्ञों तथा वैष्णवसमाज के द्वारा न केवल सुन्दर तथा प्रोत्साहक प्रतिभाव प्राप्त हुआ, कि अपि तु प्रशंसा और अभिनन्दन के पत्र भी प्राप्त हुए ।

इसके साथ कुछ उपयोगी और आवश्यक सूचन भी प्राप्त हुए जिनमें : (१) द्वितीय भाग के खण्ड ३ और ४ में दिये गये स्वरलिपिबद्ध कीर्तनों के अतिरिक्त कुछ महत्त्व की बन्दिश वाले आवश्यक कीर्तनों का समावेश, (२) द्वितीय और इस तृतीय भागों में प्रसिद्ध स्वरलिपिबद्ध कीर्तनों जैसी समान बन्दिशों में गाये जाने वाले कीर्तनों की प्रथम पंक्ति की सूची तथा (३) दोनों ग्रन्थों में प्रसिद्ध कीर्तनों की व्रजभाषा के कठिन शब्दों के अर्थ दिये जायें–ये तीन प्रमुख सूचन थे ।

ये सूचन उपयोगी होने पर भी मेरी वृद्धावस्था तथा विशेष कर आंखों की घटी हुई रोशनी की तकलीफ के कारण दो–चार महिनों तक कुछ निश्चित विचार नहीं कर सका । किन्तु “मोहि बल है दोउ ठौर को । एक भरोसो हरिभक्तन को दूजो नन्दकिशोर को” पंक्ति स्मरण आते ही शिथिल मन को श्रद्धा की शक्ति और विश्वास का सम्बल प्राप्त हुआ । इस के साथ भगवत्कृपा से आर्थिक चिन्ता और लेखनकार्य की कठिनाई स्वजनों द्वारा हल होने से तृतीय भाग का प्रकाशन सम्भव हो सका है ।

इस ग्रन्थ में उक्त तीनों सूचनों का उचित समावेश किया गया है । इनमें दूसरे सूचन के सम्बन्ध में आज से करीबन ५२ वर्षों पूर्व गुजराती भाषा में प्रकाशित मेरे प्रथम ग्रन्थ “संगीतकीर्तनपद्धति अने नित्यकीर्तन” की प्रस्तावना लिख कर मुझको अनुगृहीत करने वाले, सम्प्रदाय के प्रसिद्ध विद्वान् गो.वा., प्रो. मगनलाल गणपतिराम शास्त्री ने

उस समय मौखिक रूप से मेरा ध्यान आकर्षित किया था। उनकी पुनीत भावना को आज इस ग्रन्थ में साकार करते हुए मुझे हर्ष के साथ सन्तोष का अनुभव हो रहा है।

मेरे उक्त प्रथम प्रकाशित गुजराती ग्रन्थ के सन्दर्भ में एक और उपयोगी सूचन पखवाज (मृदंग) के तालों के सम्बन्ध में भी मिला था। सूचन यह था कि पखवाज के प्रचलित प्रसिद्ध तालों की शिक्षा के बिना साम्प्रदायिक कीर्तनपरम्परा अधूरी है। वह गुजराती ग्रन्थ अब अप्राप्य है। अतः उस ग्रन्थ में दिये गये महत्त्व के पखवाज के तालों का समावेश हिन्दी ग्रन्थ में भी किया जाय। इस सूचन की उपयोगिता को लक्ष्य में रख कर पखवाज (मृदंग) के कुछ प्रचलित एवं प्रसिद्ध तालों का एक परिशिष्ट इस ग्रन्थ में जोड़ दिया गया है।

इन महत्त्व के सूचनों के उपरान्त ग्रन्थ की उपयोगिता को लक्ष्य में रख कर कुछ आवश्यक विषयों के अन्य परिशिष्ट भी जोड़ दिये गये हैं।

सम्प्रदाय की प्राचीन कीर्तनों की बन्दिशों को संगीत की इस नई शिक्षापद्धति के अनुसार स्वरलिपिबद्ध कर भविष्य के जिज्ञासुओं के लिए सुलभ बनाने का विनम्र प्रयास इस ग्रन्थमें किया गया है तब एक विशेष सूचन करना भी आवश्यक समझता हूँ। मेरा विनम्र सूचन है कि वर्तमान परिस्थिति में प्राचीन कीर्तनशैली का जब कि लोप हो चुका है तब संगीत की स्वरलिपिबद्ध इस नूतन–शिक्षाशैली की सहायता से शिक्षा देने वाले नूतन संगीतज्ञ कीर्तनिये तैयार किये जायँ। इस प्रकार यदि शिक्षा दे सकने में समर्थ ऐसे थोड़े–बहुत कीर्तनिये भी तैयार होंगे तो उन्हीं के द्वारा भविष्य में सेंकड़ों कीर्तनिये तैयार हो सकेंगे।

यह मात्र सूचन नहीं, मेरा स्वप्न भी है।

कांकरोली से मुक्त होने के पश्चात् इस ग्रन्थ के लेखक ने लगभग ४० वर्षों पूर्व प्राचीन कीर्तनपरम्परा के कीर्तनिये तैयार करने

की एक योजना बनाई थी जिसको कांकरोली तथा सुरत के अधिपति महाराजश्रियों का सहकार भी प्राप्त हुआ था। इस दिशा में तत्कालीन कीर्तनशैली के गायक–वादक कीर्तनकारों का एक सम्मेलन श्री श्रीमान् विट्ठलदास सी. शाह तथा सुप्रसिद्ध शास्त्री गो. वा. श्रीवसन्तरामभाई की सहायता से इस लेखक ने सर्वप्रथम १९५५ में आयोजित किया था। किन्तु किसी कारण से यह इच्छा पूर्ण न हो सकी। योजना का प्रारूप और उस दिशा के सन्निष्ठ प्रयासों का इतिहास आज थी सुरक्षित है।

उसी इच्छा को स्वरलिपिबद्ध कर चिरस्थायी स्वरूप प्रदान करने का जो प्रयास आज इस ढलती उम्र में भी सम्भव हो सका है इसे मैं केवल भगवदिच्छा और कृपा का ही चमत्कार मानता हूँ। अतः मेरे उक्त सूचन के सम्बन्ध में सम्प्रदाय की पीठों के अधिपति गोस्वामीजी और धनाढ्य वैष्णव सेवक इस नूतन स्वरलिपिबद्ध पद्धति की सहायता से भविष्य में इस सम्बन्ध में जरूर प्रयास करेंगे और वही मेरे इस विनम्र प्रयास की सार्थकता होगी।

इस तृतीय ग्रन्थ के प्रकट होने में रु. ३०००/– दे कर शेष खर्च को पूरा करने की परमकृपा गो॰ श्री १०८ श्रीश्याममनोहरजी महाराज (बम्बई–किशनगढ़) ने की उसके लिए बहुत उपकृत हुआ हूँ। उस पूर्व पंचमपीठाधीश्वर गो॰ श्री १०८ श्रीगोविन्दलालजी महाराज से उनके पुत्र चि. गो. श्री गिरिधरलालजी द्वारा रु. ११००/–, गोस्वामी श्री १०८ चन्द्रगोपालजी महोदय रु. ११०० और राधावल्लभीय सम्प्रदाय के आचार्य गो. श्री लालूजी महाराज ने भी रु. ५००/– देने की कृपा की। इन सभी आचार्यों का ऋणस्वीकार करता हूँ। इनके सिवा वैष्णवों में से भी निम्न वैष्णवों ने सहाय दी है–

१	स्व. मणिलाल छगनलाल शाह (कपडवंज)	रु. ३०००/–
२	एक वैष्णव	रु. १०००/–
३	शेठ कीलाचंद देवचंद चेरिटी ट्रस्ट	रु. १०००/–
४	गीताबेन साराभाई	रु. ५००/–

नारणपुरा वैष्णव समाज (अहमदावाद) रु. ७०१-००

इन सबों का मैं ऋणी हूँ ।

आचार्य डॉ. चीनुभाई ज. नायक ने मेरा जीवनपरिचय लिख कर छपवाने के लिए दिया इसके लिए उनका भी मैं आभारी हूँ ।

इस ग्रन्थ की मुद्रणक्षम प्रतिलिपि तैयार करने में प. भ. भाई श्री जनकभाई ही. पटेल का एवं डॉ. हरगोविन्द सी. नायक का भी सानन्द आभार व्यक्त करता हूँ ।

तदुपरान्त मेरे परिवार में मेरी पत्नी तथा निकट के परिजनों के मूक किन्तु सक्रिय सहयोग को मैं भूल नहीं सकता ।

इसके साथ पू. पा. गुरुदेव का ब्लोक समय पर भेज कर गो. श्री तृतीय पीठाधीश्वर श्री व्रजेशकुमारजी महाराजने मुझे उपकृत किया है ।

मेरे पूर्व ग्रन्थों में विद्या, संगीत, कला, कीर्तन सम्प्रदायकी प्रणालि आदि जो कुछ ज्ञान प्राप्त हुआ है वह गुरुजनों की कृपा का ही फल है। अन्यथा मेरे जैसे अल्पज्ञ की सामर्थ्य के बाहर की वस्तु थी। इन सबों का ऋणस्वीकार यथास्थान किया गया है । फिर भी स्मृतिदोष के कारण किसी के नाम जाने-अनजाने छूट गये हों उनकी क्षमायाचना के साथ मेरे पितृचरण व गुरुचरणों में वन्दन करते हुए अपने इस ग्रन्थ का समापन करता हूँ।

अमदावाद-३८००१४
ता. २४-४-१९८७ **चम्पकलाल छ. नायक**
श्रीवल्लभाचार्यप्राकट्यदिन

* * *

अनुक्रमणिका

तृतीय खण्ड

क्रमांक विषय पृष्ठ

(१)

राग–केदार, ३

१ वंदू श्री विट्ठलवर सुंदर

(२)

राग–भैरव, ४

२ मंगलमंगलम् व्रजभुवि ✓

(३)

राग–रामकली, ८

१ पिय संग रंग भरी करि कलोलें

२ लालको मुख देखन हों आई १०

(४)

राग–बिभास, १२

१ प्रातसमें नवकुंजद्वार व्है

२ कोनके भुराए भोर आए हो १४

(५)

राग–ललित, १६

१ क्यों मोहन दरपन नहिं देखो

(६)

राग–मालकौंस, १८

१ मोरी भरी मटुकियाँ ले गयोरी

क्रमांक विषय पृष्ठ

२ माई रंग रंगे हो लाल १९

(७)

राग–देवगंधार, २२

१ सांवरो मंगलरूपनिधान ✓

२ नेन भरि देखो नंदकुमार २३ ✓

(८)

राग–अलहैया बिलावल, २५

१ पूजाविधि गिरिराजकी

(९)

राग–धनाश्री, २७

१ लालकों मीठी खीर जो भावे

२ में अपनो मन हरिसों, जोर्यो २८

३ मन हर ले गये नंदकुमार ३०

(१०)

राग–आसावरी, ३२

१ ग्वालिन कृष्णदरस सों अटकी

२ मेरो माई ! हरि नागर सों नेह ३३

(११)

राग–टोडी, ३४

१ जेंवत दोऊ रंगभरे

क्रमांक	विषय	पृष्ठ
	(१२)	
	राग-सारंग,	३६
१	छाक ले आई ग्वालिन गोरी	
✓ २	व्रजनन लोचन ही को तारो	३७
३	मोहन जेंवत छाक सलोंनी	३९
४	तरनितनयातीर लाल गावत	४०
५	दानघाटी छाक आई	४२
६	बेठे हरि राधेसंग	४५
७	तें मोहन को मन हर्यो	४७
✓ ८	डोल झूलत है पिय प्यारी	४९
✓ ९	नैननिमें जिन डारो गुलाल	५१
✓ १०	घर घर ग्वाल देत हें हेरी	५३
	(१३)	
	राग-सोरठ मल्हार, चौताल	५५
✓ १	झूलत सूरंग हिंडोरे राधा-मोहन	
	(१४)	
	राग गौड मल्हार	
१	घूमि घूमि घटा आई	५७
	(१५)	
	राग-धूलिया मल्हार,	५९
✓ १	जै श्रीजगन्नाथ हरिदेवा	
	(१६)	
	राग-नट मल्हार,	६१
१	अरी माई नई नई धरती	
	(१७)	
	राग-गौरी,	६४
१	नातर लीला होती जूनी	
	(१८)	
	राग-जंगला,	६५
✓ १	बाजे वधाइयां वे सैयां	
	(१९)	
	राग-यमन,	६७
१	जियकी न जानत हो पिय	
२	लाग्यो रे लाग्यो मोसो	६९
	(२०)	
	राग-खमाज,	७०
१	स्याम जमुना बिच खेवत नाव	
	(२१)	
	राग-कान्हरो,	७१
१	सूरमी कान जगाय खरिक	
२	हरि जनमत ही आनंद भयो	७३
	(२२)	
	राग-नायकी,	७५
९	वारों मीन खंजन आलीके	
	(२३)	
	राग-अडाना,	७७
१	राधेजू झूलत रमकि रमकि	
	(२४)	
	राग-बिहाग,	७८

क्रमांक विषय पृष्ठ

१ सखियन रुचि रुचि सेज, बनाई

२ घरि घरिको रुसनो ८०

३ नवल किसोर नवल नागरियां ८२

४ रावल के कहे गोप आज व्रज ८४

५ झूलेरी झूलेरी झूलें प्यारो लाल ८६

(२५)

राग–शुद्ध बसंत, ८८

१ खेलत बसंत गिरिधरनचंद

(२६)

राग–रामकली, ८९

१ माई सोहिलरा नंद महर–घर

(२७)

२८० विभिन्न समान पदोंकी नामावली ९२

परिशिष्ट–१ अष्टछापीय कीर्तन गान और साहित्य ११६

परिशिष्ट–२ हवेली संगीत के उत्साहियों को आवश्यक जानकारी १२३

परिशिष्ट–३ (अ) ढाढी लीला १२७

(ब) जोगीलीला (महादेवलीला) १३१

क्रमांक विषय पृष्ठ

परिशिष्ट–४ २८० समान पदों की नामावली के पदों की पह्चान १३४

परिशिष्ट–५ राग–नटनारायन, ताल–चर्चरी १३५

परिशिष्ट–६ मंदिरों का ध्रुपदगान १३९

परिशिष्ट–७ धोळ १४५

परिशिष्ट–८ भाग–२, ३ लिपिबद्ध पदों के १४९

कठिन शब्दों के हिन्दी एवं गुजराती अर्थ

शुद्धिपत्र पूर्वग्रंथ अ. छा. भ. सं. भाग–२ १५७

(खण्ड–३, ४) का संपूर्ण शुद्धि–पत्र

परिशिष्ट–९ पखवाज :

(मृदंग) ताल परिचय १६९

(अ) ठेका–बोल परिचय

(ब) पखवाज के आवश्यक ताल–बोल इत्यादि

ताल मर्यादा १७९

अ. छा. भ. सं. भाग–३ १८०

(खण्ड–५) का शुद्धिपत्र

लेखक के अन्य प्रकाशन १८४

स्वर–लिपि का चिन्ह परिचय

१. शुद्ध स्वरों की पहिचान के लिये कोई चिह्न नहीं है ।
जैसे :– ग, म

२. जिन स्वरों के नीचे–ऐसी आड़ी लकीर हों, वे कोमल समझना चाहिये जैसे $\underline{\text{रे}}$ $\underline{\text{ग}}$ $\underline{\text{ध}}$ $\underline{\text{नि}}$

३. स्वर के उपर खड़ी लकीर हों तो तीव्र समझना चाहिये जैसे : $\overset{|}{\text{म}}$

४. (अ) जिन स्वरों के माथेपर बिन्ही हों वे तार सप्तक के स्वर हैं, जैसे :–सां रें.

(ब) जिन स्वरों के नीचे बिन्दी हों वे मन्द्रसप्तक के स्वर हैं, जैसे :–ध़ नि़

(क) बगैर बिन्दी के स्वर मध्यसप्तक के हैं जैसे :– सारे.

५. (अ) जिस स्वरके बाद–ऐसा चिन्ह जितनी बार हो वहाँ उतनी ही मात्रा तक उस स्वर को बढाना चाहिए ।
जैसे :– सा –, रे –

६. स्वरों में या गीत में $\smile$ ऐसा अर्धचन्द्राकार चिन्ह के अन्दर लिखे हुए स्वरों को एक मात्रा काल में गाने बजाने चाहिये, जैसे :– $\underset{\smile}{\text{सारे}}$ $\underset{\smile}{\text{सारेग}}$

७. एक स्वर से दुसरे स्वर पर मींड से जाने आने के के लिए ऊपर की तरफ $\frown$ ऐसा चिन्ह दिया जाता है, जैसे :– $\overset{\frown}{\text{मरे}}$

ताल–चिन्ह :–

(१) × ऐसा चिन्ह गाने बजाने में 'सम' को दिखाता है । ताल में पहली मात्रा और पहलीताली को सम कहते हैं ।

(२) ० यह चिम्ह खाली का है ।

(३) २, ३, ४, ऐसे नम्बर क्रमशः दूसरी तीसरी और चौथी ताली बताते हैं ।

(४) । मात्रा या तालों के बीच ऐसी खडी लकीर जो खींची जाती है. वे प्रत्येक विभाग या खण्ड के लिए है ।

अष्टछापीय भक्तिसंगीत

उद्भव और विकास

पंचम् खण्ड

पूर्ति

चम्पकलाल छ. नायक

आवश्यक सूचना

(१) असारवा (अहमदाबाद) के गोपालदास का मूँगापन अष्टछापके स्थापक श्रीविट्ठलेश्वरने अपने चर्वित तांबूल देकर दूर किया। बादमें शीघ्र ही गोपालदासजीने काव्यमय उस समयके प्रचलित रागोंमें तथा गुजराती भाषामें नवाख्यानका जो गान किया वह सम्प्रदायके इतिहासमें सुप्रसिद्ध है, जिनमेंसे प्रथम आख्यानमें अपने गुरुकी जो वंदना कि है उसकी उसी रागमें स्वरलिपि देकर यहाँ सर्वप्रथम आरम्भ किया गया है।

(२) वन्दनाके पश्चात् यहां २० रागोंमें जो स्वरलिपियां दी गई हैं उन रागोकी शास्त्रीय परम्परा एवम् अन्य विवरण आदि माहितीके लिये "अ. भ. संगीत–उद्भव और विकास" भा. २ की अनुक्रमणिकामें देखिये।

(३) इस ग्रन्थमें दे गये तालोंका "विवरण, मात्रा, बोल" इत्यादि भी भा. २ में प्रकाशित किये गये हैं अतः यहां पुनरावर्तन किया नहि है।

(४) इस ग्रन्थके पूर्व भाग—२ (खण्ड ३—४) में लिपिबद्ध दिये गये १८५ एवम् इस ग्रन्थकी ४५ स्वरलिपियों सहित २३० पदोंके आधार पर उसी स्वरलिपि पर आधारित अन्य नित्य, बधाई, वसन्त एवम् त्यौहार आदि प्रणालिके कीर्तन जो गाये जाते हैं उनकी संख्या २७० का संशोधित संग्रह यहाँ दिया जा रहा है, जिससे लगभग ५०० कीर्तनोंकी बंदीशोंका खयाल जिज्ञासुओंको एवम् शिखनेके उत्साही वैष्णवोंको सरल होगा।

पृष्ठ १२ पर बिभास रागकी स्वरलिपिमें एक ही बन्दीशके दो पदोंका अंकन किया गया है। इन स्वरांकनके नीचे प्रथम पंक्तिमें जगायवेका पद और द्वितीय पंक्तिमें मंगला—आरतीका पद एक ही स्वरांकनमें बताया गया है। इसी उदाहरण अनुसार हमारे द्वितीय और यह तृतीय भाग की स्वरलिपिमें स्वरबद्ध दिये गये २३५ पदोंकी बन्दीशमें गाये जानेवाले २७५ पदोंकी सूची स्वरांकनोंके पश्चात् दी गई है। जिनमें स्थायी की प्रथम पंक्ति लिपिके अंकन अनुसार उदाहरणार्थ दी गई है। जिससे कुल मिलाकर ५०० से अधिक कीर्तनोंका ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

गीत संगीतसागराय नमः ।

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे श्रीमद्वल्लभनन्दनम् ॥

वंदना

राग केदार—ताल त्रिताल

वंदू श्री विट्ठलवर सुंदर, नवघनश्याम तमाल;
जगतीतल उद्धार करेवा, प्रगटया परम दयाल ॥१॥
श्रीपुरुषोत्तम स्वतंत्र क्रीडा, लीला द्विजतनु धारी,
सात दिवस गिरिवर कर धार्यो, वासववृष्टि निवारी ॥२॥

× × ×

पूरणब्रह्म श्रीलक्ष्मणसुत, पुरुषोत्तम श्रीविट्ठलनाथ,
श्रीगोकुलमां प्रगट पधार्या, स्वजन कीधां सनाथ ॥२४॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	–	म	ग	प	–	प	म॑प	ध	धनि॒	ध	प	म॑प	धप	म	म
वं	–	दूं	–	श्री	–	वि	––	ट्ठ	ल–	व	र	सुं–	––	द	र
–	मग	प	म॑प	धनि	सां	ध	प	म	–	प	–	म	सा	रे	सा
–	नव	घ	न–	स्या	–	म	त	मा	–	–	–	–	–	–	ल
सा	सा	म	ग	प	प	प	म॑प	ध	धनि॒	ध	प	म॑प	धप	म	–
ज	ग	ती	–	त	ल	उ	––	द्धा	––	–	र	क–	रे–	वा	–
–	मग	प	म॑प	धनि	सां	ध	प	म	–	प	–	म	सा	रे	सा
–	प्रग	टया	--	प–	र	म	द	या	–	–	–	–	–	–	ल

अंतरा

×	२	०	३
प – प प	नि ध नि ध	सां सां – सां	सां रें सां –
श्री – पु रु	षो – त्त म	स्व तं – त्र	क्री – डा –
सां ध ध –	ध नि सां रें	सां नि सां –	ध नि प –
ली – ला –	द्वि ज त नु	धा – – –	– – री –
प – प प	ध ध प प	म म प म	रे – सा –
सा – त दि	व स गि रि	व र क र	धा – र्यो –
सा – म ग	प – म॑ प	ध नि ध प	म रे सा –
वा – स व	वृ – ष्टि नि	वा – – –	– – री –

श्रीमत्प्रभुचरण गुसांईजीकृत यह कीर्तन मंगलभोग सरे
हंमेशा गाया जाता है ।

राग भैरव–ताल चर्चरी

मंगलमंगलम् व्रजभुवि मंगलम् ।
मंगलमिह श्रीनंदयशोदानामसुकीर्तनमेतद्रुचिरोत्संगसुलालितपालितरुपम् ॥१॥
श्रीश्रीकृष्ण इति श्रुतिसारं नाम स्वार्तजनाशयतापापहमिति मंगल रावम् ।
व्रजसुन्दरीवयस्यसुरभीवृन्दमृगीगणनिरुपमभावामंगलसिंधुचयाय ॥२॥
मंगलमीषत्स्मितयुतवीक्षणभाषणमुन्नतनासापुटगतमुक्ताफलचलनम् ।
कोमलचलदंगुलिदलसंगतवेणुनिनादविमोहितवृन्दावनभुवि जाताः ॥३॥

मंगलमखिलं गोपीशितुरिति मन्थरगतिविभ्रममोहितरासस्थितगानम् ।
त्वं जय सततं श्रीगोवर्धनधर पालय निजदासान् ।।४।।

स्थायी

०		३			×		२		
मग	म	प	म	प	ध	-	ध	प	-
मं-	-	ग	ल	-	मं	-	ग	लं	-
म	ग	रे	ग	मप	म	ग	रे	सा	-
व्र	ज	भु	वि	--	मं	-	ग	लं	-

अंतरा

×		२			०		३		
ध	-	ध	प	ध	नि	नि	सां	-	-
मं	-	ग	ल	-	मि	ह	श्री	-	-
रें	-	रें	-	रें	गं	रें	सां	-	-
न	-	न्द्	-	य	शो	-	दा	-	-
रें	-	सां	-	सां	नि	सां	नि	ध	प
ना	-	म	-	सु	की	-	तं	न	-
ग	म	ध	ध	ध	प	म	प	प	म
मे	-	त	द्रु	चि	रो	-	त्सां	ग	सु
प	ध	नि	सां	-	नि	ध	प	ग	म
ला	-	लि	त	-	पा	-	लि	-	त

ध	प	ध	सांनि	सां	–	–	धप	गम	
रू	–	–	वं	–	–	–	मं	ग	ल

संचारी

×		२			०		३		
ध	–	ध	प	म	प	–	प	–	–
श्री	–	श्री	–	–	कृ	–	ष्ण	–	–
नि	सां	नि	ध	प	गम	पध	प	–	–
इ	ति	श्रु	ति	–	सा–	––	रं	–	–
ध	–	ध	प	म	प	म	ग	म	ग
ना	–	म	स्वा	–	तं	ज	ना	–	श
ग	रे	सा	–	सा	ग	म	प	प	–
य	–	ता	पा	–	प	ह	मि	ति	–
ध	प	म	ग	म	ग	रे	रे	–	सा
मं	–	ग	ल	–	रा	–	वं	–	–

आभोग

×		२			०		३		
ध	ध	ध	प	ध	नि	सां	सां	सां	सां
ब्र	ज	सु	–	न्द	री	–	व	य	स्य
रें	रें	रें	रें	–	गं	रें	सां	सां	–

सु	र	भी	वृ	–	न्द	–	मृ	गी	–
रें	रें	सां	सां	नि	ध	–	प	प	–
ग	ण	नि	रु	–	पं	–	भा	वा	–
ग	म	ध	ध	प	प	म	प	प	म
मं	–	ग	ल	–	सिं	–	धु	–	च
ध	प	ध	सांनि	सां	–	ध	प	म	प
या	–	–	य–	–	–	मं	–	ग	ल

मं–गल–मीष– – –तुस्मितयुत–वी–क्षण–भा–षण–सु–न्न–त–ना–सा–पु ट ग त–मु–क्ता फ ल च ल नं– – ।। संचारी अनुसार ।

को–म ल–च ल दं–गु लि–द ल–सं–ग त–वे–णु नि–ना–द–वि मो–हि त–वृन्दा– –व न सु वि–जा–ता– – ।। आभोग अनुसार ।

संचारी–३

×		२			०		३		
ध	–	ध	प	म	प	प	प	–	–
मं	–	ग	ल	–	म	खि	लं	–	–
प	ध	नि	सां	सां	नि	ध	ध	प	प
गो	–	पी	शि	तु	रि	ति	म	न्थ	र
प	ध	नि	ध	प	म	–	प	प	–
ग	ति	वि	भ्र	म	मो	–	हि	त	–

ग	म	रे	ग	म	ग	रे	रे	–	सा
रा	–	स	स्थि	त	गा	–	नं	–	–

आभोग–३

×		२			०		३		
ध	–	ध	प	ध	नि	नि	सां	–	सां
त्वं	–	ज	य	–	स	त	तं	–	श्रा
रें	–	–	रें	–	गं	रें	सां	सां	–
गो	–	–	व	–	र्धं	न	ध	र	–
नि	सां	नि	ध	प	ध	प	म	ग	म
पा	–	ल	य	–	।न	ज	दा	–	–
ध	प	ध	सांनि	सां	–	–	धप	गम	प
सा	–	–	–	न्	–	–	मं–	ग–	ल

"प्रत्येक ट्टक अन्तरानुसार"

राग रामकली–ताल चर्चरी (झपताल अंग)

पिय संग रंग भरि करि कलोलें ।
सबनकों सुख देन पियसों करत सेन, चित्त तब परत चेन जबहिं बोले॰ ॥२॥
अति ही विख्यात सब बात इनके हाथ, नाम लेत ही कृपा करें अतोलें ।
दरस करि परस करि ध्यान हियमें रहे, सदा व्रजनाथ इन संग डोलें ॥२॥
अति ही सुखकरन दुःख सबनके हरन, एहि लिनो परन दे जु कोलें ॥
जेसी जमुने जानि नित करौं गुनगान, 'रसिक प्रीतम' पाय नग अमोलें ॥३॥

स्थाया

×		२			०		३		
सा	सा	म	ग	म	प	—	प	ग	म
पि	य	सं	—	ग	रं	—	ग	भ	रि
प	ध	ध	प	ध	पध	नि	धप	मग	म
क	रि	क	लो	—	ले—	—	——	——	—
ध	ध	प	—	प	म	—	म	ग	म
पि	य	सां	—	ग	रं	—	ग	भ	रि
म	रे	ग	म	प	मग	म	रे	सा	—
क	रि	क	लो	—	ले—	—	—	—	—

अंतरा

×		२			०		३		
ध	ध	ध	प	ध	नि	नि	सां	—	सां
स	ब	न	कौं	—	सु	ख	दै	—	न
रें	रें	रें	—	सां	गं	रें	सां	—	सां
पि	य	सौं	—	क	र	त	सै	—	न
सां	सां	रें	सां	सां	नि	ध	प	—	ष
चि	त्त	त	ब	प	र	त	चे	—	न
ग	म	प	प	ध	सांनि	सांनि	धप	मग	म
ज	ब	हि	बो	—	लें—	——	——	——	—

संचारी

×		२			०		३		
म	म	म	ग	म	प	—	प	ग	म
अ	ति	ही	वि	—	ख्या	—	त	स	ब
ध	—	ध	प	म	प	—	म	—	म
बा	—	त	इ	न	के	—	हा	—	थ
ग	रे	रे	ग	म	प	म	ग	रे	सा
ना	—	म	ले	—	त	हा	कृ	पा	—
सा	रे	ग	म	प	मग	म	रे	—	सा
क	रैं	अ	तो	—	लें	—	—	—	—

"आभोग अन्तरानुसार"

द र स क रि प र स क रि ध्या–न हि य में–रहे–
स दा–वृ ज ना–थ इ न सं–ग डो–लें– – – –

राग रामकली–ताल त्रिताल (८ मात्रा)

लालको मुख देखन हों आइ ।
कालि मुख देखि गइ दधि बेचन, जात हिं गयो बिकाइ ॥१॥

नितते दूनो लाभ भयो घर काजर बछियां जाइ ।
आइ हों धाय थंभाइ साथकी, मोहन देहु जगाइ ॥२॥

सुनि तिय बचन बिहसि उठी बेठे, नागरि निकट बुलाइ ।
'परमानंद' सयानी ग्वालिभी, सेंन संकेत बताइ ॥३॥

स्थायी

×		२		०		३		×		२		०		३	
सा	सा	ग	म	प	प	ध	प	पध	निसां	नि	ध	प	म	गम	प
मु	ख	दे	-	ख	न	हों	-	आ-	--	इ	ला	-	ल	को-	-
पध	नि	ध	प	म	ग	रे	सा	सारे	गम	गम	पध	पम	गम	प	-
मु-	ख	दे	-	ख	न	हों	-	आ-	--	--	--	इ-	--	-	-

अंतरा

×		२		०		३		×		२		०		३	
ध	ध	प	ध	सां	-	सां	सां	सांरें	गंमं	गं	रें	सांरें	गंरें	सां	स
क	ल	मु	ख	दे	-	ख	ग	ई-	--	द	धि	बे-	--	च	न
सांरें	सां	नि	ध	प	प	धप	मग	गम	पध	प	ध	प	म	गम	प
जा-	-	त	हि	ग	यो	हे-	बि-	का-	--	इ	ला	-	ल	को-	-

संचारी

×		२		०		३		×		२		०		३	
सां	सां	सांनि	सां	नि	ध	पम	गम	ध	प	म	म	गम	पध	प	प
नि	त	तें-	-	दू	-	नो-	--	ला	-	भ	भ	यो-	--	घ	र
ग	-	म	ग	रे	सारे	सा	-	सारे	गम	गम	पध	पम	गम	प	-
का	-	ज	र	ब	छि-	या	-	जा-	--	--	--	इ-	--	-	-

आभोग

× २ ० ३ × २ ० ३

– ध प ध | सां – | सां सां | सांरें गंमं | मं मंगं | रें रें | सां –

– आ इ हों | धा – | य थं | भा- –– | इ सा– | – थ | की –

– सांरें गं रें | सांनि सां | निध पम | गम पध | सांनि ध | प म | गम प

– मो– ह न | दे– – | हु– ज– | गा- –– | इ– ला | – ल | को- –

× ×

सुनितिय बचनबिह सउठ बै–ठे–ना–गरिनिकटबुला – – –इ – –

× ×

परमा–नं–दसया–नी–ग्वा–लिनी– सें न सं के–तबता –ईला–लको–

"संचारी-आभोगानुसार"

राग बिभास–ताल–त्रिताल (आठ मात्रा)

प्रातसमें नवकुंजद्वार व्है ललिता ललित बजाई बीना। पोढौं सुनत श्याम श्रीस्यामा, दंपति चतुर नवीन नवीना ।।१।। अति अनुराग सुहाग भरे दोउ कोक कलाजु प्रवीन प्रवीना। 'चत्रभुजदास' निरखि दंपतिछबि, तन मन धन न्योछावर कीना ।।२।।

स्थायी

३	×	२	०	३	×	२	०
ध –	प ध	सां –	ध प	ग –	ध प	रे रे	सा –
प्रा –	त स	में –	न व	कुं –	ज द्वा	– र	व्है –
प्रा –	त स	में –	न व	कुं –	ज म	ह ल	में –

ग ग	ग -	प प	ध पध	सां -	ध प	ग रे	सा -
ल लि	ता -	ल लि	त ब-	जा -	ई -	बी -	ना -
श्री -	रा -	धा -	ओ र	नं -	द कि	शो -	र -

अंतरा

३	×	२	०	३	×	२	०
प ग	प ध	सां सां	सां सां	ध ध	सां -	रें -	सांध सां
पो -	ढे -	सु न	त स्या	- म	श्री -	स्या -	मा- -
द -	क्षि ण	क र	मु -	कता -	स्या -	मा -	के -
ध -	ग ग	प प	ध पध	सां -	ध प	ध पग	रे सा
दं -	प ति	च तु	र न-	वी -	न न	वी --	ना -
त्य ज	त हं	- स	ओ र	चु ग	त च	को -	र -

सांचारी

३	×	२	०	३	×	२	०
प प	प प	ध -	ष ध	सां -	ध प	ध प	गप ध
अ ति	अ नु	रा -	ग सु	हा -	ग भ	रे -	दो- उ
ता -	प र	ए -	क अ	धि क	छ बि	उ प	ज त
सां -	ध प	ध -	प प	ग रे	सा रे	सारे गरे	साध़ सा

को	-	क	क	ला	-	जु	प्र	वी	-	न	प्र	वी-	--	ना-	-
ऊ	-	प	र	भ्र	म	र	क	र	त	ध	न	घे	-	र	-

" आभोग अंतरानुसार "

राग विभास—ताल चौताल

कोनके भुराए भोर आए हो भवन मेरे ऊँची दृष्टि क्यों न करो काहेको लजानें (हो) ॥ जाहि कौ भवन भावे ताहीकें सिधारौ कान्ह काहि एसी चाड परी कोन गही आनें (हो) ॥१॥ भोरी भोरी बतियनि मोहिं भुरबन आए अब जानत नाहिन कोउ आए चतुर सयानें (हो) ॥ "कृष्णदास"प्रभु रसिक—मुकुटमनि छाँडहु लाल नीकें पहिचानें (हो) ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	ध	रें	सां	ध	प	प	-	प	ध	-	ध
को	-	न	के	-	मु	रा	-	ए	भो	-	र
प	-	ग	पग	ध	प	रे	रे	-	साध़	सा	सा
आ	-	ए	हो-	-	भ	व	न	-	मैं-	-	रे
ग	-	ग	प	-	प	ध	-	प	ध	ध	-
ऊं	-	ची	दृ	-	ष्टि	क्यो	-	न	क	रो	-
सां	ध	रें	सां	ध	प	ध	प	प	ग	प	ध
का	-	हे	कों	-	ल	जा	-	नें	हो	-	-

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	ध	प	सां	सां	–	सां	–	सां
जा	–	हि	को	–	भ	व	न	–	भा	–	वे
ध	ध	ध	सां	रें	रें	सांरें	गं	रें	सांध	सां	सां
ता	–	हि	कैं	–	सि	धा-	–	रौ	का-	–	न्ह
सां	–	सां	सां	ध	प	पग	ध	ध	प	ध	–
का	–	हि	ए	–	सी	चा-	–	ड	प	री	–
प	गं	रें	रें	सां	–	रें	सां	ध	प	गप	ध
को	–	न	ग	हो	–	आ	–	ने	हो	– –	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	–	प	ध	ध	प	ध	–	ध
भो	–	री	भो	–	री	ब	ति	य	नि	मो	हि
सांध	सां	ध	सां	–	ध	सां	रें	सां	सां	ध	प
भु-	–	र	व	–	न	आ	–	ये	अ	–	ब
सां	सां	–	सां	ध	प	ग	ध	प	रे	–	सा
तु	म	–	गि	–	रि	धा	–	री	जू	–	–

सा ध़	सा सा	रे रे	सारे गप	रे साध़	सा –
नि प	– ट	– स	या ---	ने हो–	– –

कृ——ष्ण——दा–स प्र भु–,र सि–क–सि रो–म नि–
छाँ–ड हु छाँ–ड हु–ला–ल, नी–कें प हि चा–नें –हों–

"आभोग अन्तरानुसार"

राग ललित—ताल त्रिताल (८ भात्रा)

क्यों मोहन दरपन नहिं देखो ॥
क्यों धरनी पग नख नख नावत, क्यों मोतन नहीं पेखो ॥१॥
क्यों ठाडे क्यों बेठत नाहिं, कहा परी हम चूक ॥
पीतांबर गही कह्यो बेठिए, कहाजु रहे हो मूक ॥२॥
उधर गयो उरतें उपरना, देखियत अंग विभाग ॥
'सूरस्याम' लटपटी पाग पर, यावक की छवि लाग ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
म॑ ग	रे̱ सा	नि़ रे̱	ग म	म॑ म	म म	म॑म गम	ग –
क्यों –	मो –	इ न	द र	प न	न ही	दे- --	खो –

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
ध म॑ध	सां सां	सां -	सां सां	नि रें॒	सां गं	रें॒ सां	सां सां
क्यों --	ध र	नी -	प ग	न ख	न ख	ना -	व त
रें॒ सां	सां -	नि नि	ध ध	म॑ ध	नि ध	नि ध	म॑ म
क्यों -	मो -	त न	न हीं	पे -	- -	खौ -	- -

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
म -	म म॑	ग -	म॑ ध	नि ध	म॑ ध	म॑ म	म -
क्यों -	ठा -	डे -	क्यां -	वे -	ठ त	ना -	ही -
म ग	रे॒ सा	नि़ रे	ग म	म॑ म	म म	ग रे॒	ग म
क हा	- प	री -	ह म	चू -	- -	क -	- -

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३
- ध	म॑ ध	सां सां	सां सां	सां सांरें॒	गं मं॑	गं रें॒	सां -
- पी	तां -	व र	ग ही	क ह्यो-	- बे	- ठि	ये -
सांनि रें॒	सां सां	सां -	नि रें॒	नि ध	नि ध	म॑ -	म -
क- हा	जु र	हे -	हो -	मू -	- -	- -	क -

राग मालकौंस-ताल त्रिताल

मोरी भरी मटुकियाँ ले गयोरी ।
आपुन खात ग्वाल ही खवावत, रीति कर मोहि दे गयोरी ॥१॥

बृन्दावनकी सघन कुंजमें, ऊँची नीची मोसों कहि गयोरी ।
'परमानन्द' ब्रजवासी सांवरो, अंगुठा दिखाय रस ले गयोरी ॥२॥

स्थायी

०	३	×	२
ग गम ग सा	नि सा ध नि	सा — म ग	म — म म
भ री— — म	टु कि यां —	ले — ग यो	री — मो री
ग गम ग सा	निसा गसा ध नि	सा — म ग	म — गम धम
भ री— — म	टु— कि— यां —	ले — ग यो	री — मो— री—

अंतरा

०	३	×	२
ग — म म	ध — नि नि	सां सां सां सां	गं नि सां सां
आ — पु न	खा — त ग्वा	— ल ही ख	वा — व त
नि नि सां गं	सां नि नि —	ध नि सां निसां	ध धनि ध म
री ति क र	मो — हि —	दे — ग यो—	री —— मो री

संचारी

०				३				×				२			
म	ग	म	-	ध	ध	नि	-	सां	सां	नि	ध	नि	ध	म	-
वृं	-	दा	-	व	न	की	-	स	घ	न	कुं	-	ज	में	-
ग	गम	ग	सा	गसा	निसा	ध	नि	सा	सा	म	ग	म	-	-	-
ऊं	ची-	नी	ची	मो-	--	सों	-	क	हि	ग	यो	री	-	-	-

आभोग

०				३				×				२			
ग	ग	म	म	ध	ध	नि	धनि	सां	-	सां	सां	गं	नि	सां	-
प	र	मा	नं	-	द	ब्र	ज-	बा	-	सी	सां	-	व	रो	-
नि	नि	सां	सां	गं	गं	मं	गं	सां	-	नि	सां	ध	धनि	ध	म
अं	गु	ठा	दि	खा	य	र	स	ले	-	ग	यो	री	--	मो	री

राग मालकौंस—ताल चौताल

माइ रंग रंगे हो लाल उनही त्रियन संग, छबि देखियत ढंग परत कछु ओर ओर ॥
ले दरपन देखियेजु प्यारे लाल, अधरन अंजन लाग्यो ठोर ठोर ॥१॥
मोसों अवधि बदी ओरनसों रति मानी, प्रींत करत फिरत नइ पोर पोर ।
जाओजी जाओजी तुम उनहीके 'सूर' प्रभु, काहे को आवत मेरे प्रात दोर दोर ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
म	$\underline{\text{ग}}$	सा	सा	$\underset{\cdot}{\underline{\text{ध}}}$	$\underset{\cdot}{\underline{\text{नि}}}$	सा	—	म	म	—	म
रं	—	—	ग	—	रं	गे	—	हो	ला	—	ल
$\underline{\text{ग}}$	$\underline{\text{ग}}$	म	$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{ध}}$	म	—	म
उ	न	—	ही	—	त्रि	य	—	न	सं	—	ग
$\underline{\text{ग}}$	$\underline{\text{ग}}$	म	म	$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{नि}}$	—	सां	सां	सां	सां
छ	बि	दे	खि	य	त	हं	—	ग	प	र	त
$\underline{\text{गं}}$	सां	—	$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{ध}}$	म$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{ध}}$	म	$\underline{\text{ग}}$	सा
क	छु	—	ओ	—	र	ओ—	—	र	मा	—	इ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
$\underline{\text{ध}}$	म	—	$\underline{\text{ध}}$	—	$\underline{\text{नि}}$	सां	—	—	सां	—	—
ले	—	—	द	—	र	प	—	—	न	—	—
$\underline{\text{गं}}$	सां	सां	$\underline{\text{नि}}$	—	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{ध}}$	$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{ध}}$	म	—	म
दे	—	खि	ये	—	जु	प्या	—	रे	ला	—	ल

ध	नि	सां	मं	गं	मं	गं	सां	—	सां	—	सां
अ	ध	—	र	—	न	अं	—	—	ज	—	न
गं	सां	नि	ध	नि	ध	मध	नि	ध	म	ग	म
ल	ग्यो	—	ठो	—	र	ठो—	—	र	मा	—	इ

सांचारी

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	ग	म	म	ध	म	—	म	म	—
मो	—	:—	सों	—	अ	व	धि	—	ब	दी	—
ग	—	म	म	ध	ध	नि	ध	नि	ध	म	म
ओ	—	र	न	—	सों	र	ति	—	मा	—	नी
ध	—	—	नि	—	सां	सां	सां	—	नि	ध	म
प्री	—	—	त	—	क	र	त	—	फि	र	त
ग	म	ग	सा	ध	नि	सा	—	म	म	—	म
न	इ	—	पो	—	र	पा	—	र	मा	—	इ

आभोग

×		०		२		०		३		४	
ग	म	—	ध	—	नि	सां	—	सां	सां	—	सां
जा	ओ	—	जी	—	जा	ओ	—	जी	तु	—	म

गं	सां	–	नि	–	नि	ध	–	नि	ध	–	म
उ	न	–	ही	–	कें	सू	–	र	प्र	–	भु
ध	–	नि	सां	–	सां	गं	–	मं	गं	सां	सां
का	–	हे	को	–	आ	व	–	त	मे	–	रे
गं	सां	सां	नि	–	नि	ध	नि	ध	म	ग	म
प्रा.	–	त	दो	–	र	दो	–	र	मा	–	इ

राग देवगंधार–ताल तीव्रा

सांवरो मंगलरूप निधान ।
जा दिनते हरि गोकुल प्रगटे, दिन दिन होत कल्यान ॥१॥

बेठि रहो स्यामगुन सुमरो, रेन दिना सब याम ।
'श्रीभट'के प्रभु नेन भरि देखो, कमलनयन घनश्याम ॥२॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
सां	सां	सां	ध	प	प	पध	सां	निध	प	म	ग	गम	प
मं	ग	ल	रू	–	प	नि–	धा	––	न	सां	–	ब–	री
नि	ध	ष	मग	रे	गम	प	म	ग	म	रे	–	सा	–
मं	ग	ल	रू-	–	प–	नि	धा	–	–	–	–	न	–

अंतरा

× २	३	४	× २	३	४
म म म	प ध	सां सां	रें रें रें	गं रें	सां —
जा दि न	ते —	ह रि	गो कु ल	प्र ग	टे —
रेंरें रें सां	ध प	प पध	नि ध प	ग म	प प
दिन दि न	हो —	त क-	ल्या — न	सां —	व रो

संचारी

× २	३	४	× २	३	४
सां सां सां	ध प	प ध	नि ध प	म गम	प —
वे ठि र	हो —	स्या —	म गु न	सु म-	रो —
धनि ध प	मग म	गम प	म ग म	रे —	सा —
रे- न दि	ना- —	स- ब	या — —	— —	म —

“ आभोग अन्तरासुसार ”

राग देवगंधार—ताल आडाचौताल

नेन भरि देखो नंदकुमार ।
जसुमतिकूखि चंद्रमा प्रगट्यो, या व्रजको उजियार ॥१॥
बन जिनि जाउ आज सब कोऊ, गोसुत गांइ गुआर ।
×××× गोकुलवधू निरखि आनंदित, सुंदरताको सार ।
दास ‘चत्रभुज’प्रभु चिरिजीवो गिरधर प्रान आधार ॥५॥

स्थायी

×		२				३				४			
म	–	म	–	–	–	प	–	–	–	प	ध	रें	–
दे	–	खो	–	–	–	नं	–	–	–	द	–	कु	–
सां	–	–	–	रें	–	नि	ध	प	म	ग	म	प	प
मा	–	–	–	–	–	र	–	–	ने	–	न	भ	रि
नि	–	ध	प	म	–	म	ग	म	रे	ग	म	प	–
दे	–	खो	–	–	–	नं	–	–	–	द	–	कु	–
म	ग	म	–	रे	–	खा	–	–	म	ग	म	प	प
मा	–	–	–	–	–	र	–	–	ने	–	न	भ	रि

अंतरा

×		२				३				४			
म	म	म	ग	म	–	प	–	प	:ध	सां	–	–	–
ज	सु	म	–	ति	–	कू	–	–	–	खि	–	–	–
सां	रें	मं	–	मं	–	रें	–	रें	–	सां	–	–	–
चां	–	द्र	–	मा	–	प्र	–	ग	–	ट्यो	–	–	–
रें	–	रें	–	सां	–	रें	नि	ध	प	प	–	प	ध
या	–	ब्र	–	ज	–	को	–	–	–	उ	–	जि	–

सां	-	-	-	रें	नि	ध	प	ध	म	ग	म	प	प
या	-	-	-	-	-	र	-	-	ने	-	न	भ	रि

संचारी

×		२				३				४			
सां	सां	सां	-	सां	-	ध	-	-	-	प	-	-	-
ब	न	जि	-	न	-	जा	-	-	-	उ	-	-	-
नि	-	ध	-	प	-	म	ग	म	-	ग	म	प	-
आ	-	-	-	ज	-	स	-	ब	-	को	-	ऊ	-
नि	-	ध	-	प	-	म	ग	रे	ग	म	-	प	-
गो	-	सु	-	त	-	गा	-	-	-	इ	-	गु	-
म	ग	म	-	-	-	रे	-	-	-	सा	-	-	-
आ	-	-	-	-	-	र	-	-	-	-	-	-	-

"आभोग अन्तरानुसार"

राग अल्हैया बिलावल—ताल धमार

पूजाबिधि गिरिराजकी, नंदलाल बतावें ।
झुंडन झुंडन गोपिका, मिलि मंगल गावें ।।१।।
गंगाजलसों न्हवाइकें, दूध धौरीको नावें ।
बिबिध बसन पहिरायकें, चंदन चरचावें ।।२।।
धूप दीप करि आरती, बहु भोग धरावें ।
तिलकु कियो बीरा दियो माला पहिरावें ।।३।।
खरिक चले लहुरे बडे, मिलि गाय खिलावें ।
फिरि गिरिधर भोजन कियो, सुख 'सूर' दिखावें ।।४।।

स्थायी

×	२	०	३
सां – – ध न	प –	ध प –	म – ग –
पू – – जा –	– –	बि धि –	गि – रि –
रे – – ग म	प ग	रे सा –	ध – ध –
रा – – – –	– ज	की – –	नं – द –
नि ध प म ग	म रे	ग प –	ध – नि –
ला – – ल –	– ब	ता – –	वें – – –

अंतरा

×	२	०	३
गं – – गं –	गं –	रें – –	सां – सां –
झूं – – ड –	न –	झूं – –	ड – न –
– – – सां रें	गं रें	सां – –	ध – ध –
– – – गो –	– पि	का – –	मि – ल –
नि ध प म ग	म रे	ग प –	ध – नि –
मं – – ग –	ल –	गा – –	वें – – –

संचारी

×	२	०	३
सां – – सां –	– –	नि ध प	म – ग –
गं – – गा –	– –	ज ल –	सो – म्ह –

म	रे	-	ग	म	प	ग	म	रे	सा	ध	-	ध	-
वा	-	-	-	-	-	इ	कें	-	-	दू	-	ध	-
नि	ध	प	म	ग	सा	रे	ग	-	-	रे	-	सा	-
धो	-	-	री	-	को	-	ना	-	-	वें	-	-	-

विवि–ध–ब–सन–प–हे– – – –रा– –इके– –
चं– – –दन–च–र–चा– –वें – – –

"आभोग अन्तरानुसार"

राग धनाश्री–ताल त्रिताल (आठ भाग)

लालकों मीठी खीर जो भावे ।
बेला भरि भरि लावत जसोदा, बूरों अधिक मिलावे ॥१॥

कनिया लियें जसोदा ठाडी, रुचिकर कोर बनावे ।
ग्वालबाल बनचरन के आगें, झूठें ही हाथ दिखावे ॥२॥

व्रजरानीजु चहुँधा चितवत, तम मन मोद बढावे ।
'परमानंददास'को ठाकुर, हँसी हँसि कंठ लगावे ॥३॥

स्थायी

×		२		०		३		×		२		०		३	
नि	-	नि	-	सां	-	सां	रें	सांनि	सां	निध	प	म	ग	गम	प
मी	-	ठी	-	खी	-	र	जो	भा-	-	वे-	ला	-	ल	को-	-
नि	-	ध	प	प	म	म	म	म	ग	गम	प	ग	रे	सा	-
मी	-	ठी	-	खी	-	र	जो	भा	-	——		वे	-	-	-

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
प –	प –	म पम	ग म	प –	नि नि	सां सां	सां –
बे –	ला –	भ रि–	भ रि	ला –	व त	ज सो	दा –
गं –	गं –	रेंसां नि	सां रें	सांनि सां	निध प	म ग	म प
बू –	रों –	अ– धि	क मि	ला– –	वे– –	ला –	ल को

सचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
ध ध	ध –	प प	– पध	नि –	सां –	नि ध	प –
क नि	या –	लि यें	– ज–	सो –	दा –	ठा –	ढी –
प नि	ध प	म –	म प	म ग	म प	ग रे	सा –
रु चि	क र	को –	र ब	ना –	– –	बे –	– –

ग्वा—ल बा—ल ब न च र न के आ—गे—
झू—ठें ही हा—थ दि खा—वे—ला—ल को

"आभोग अन्तरानुसार"

राग धनाश्री—ताल धमार (मध्यलय विलंबित)

में अपनो मन हरिसों जोर्यौं, हरिसों जोरि सबनिसों तोर्यौं ।
नाच नच्यो तब घूंघट केसो, लोकलाज डर पटकि पिछोर्यौं ॥१॥
आगें पाछें सोंच मिट्यो जियको, बाट मांझ मटुका ले फोर्यौं ।
कहनो होइ सो कहो सखीरी कहा भयो काहू मुख मोर्यौं ॥२॥
नवललाल गिरिधरन पिया संग, प्रेमरंगमें यह तन बोर्यौं ।
'परमानंद'प्रभु लोक हँसनि दै, लोक वेद तिनुका ज्यों तोर्यौं ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३
नि – – सां नि	सां रें	सां – –	$\underline{\text{नि}}$ ध प म॑
में – – अ –	प –	नो – –	म – न –
$\underline{\text{ग}}$ $\underline{\text{ग}}$ – म –	प –	म $\underline{\text{ग}}$ –	रे – सा –
ह रि – सां –	– –	जो – –	यों – – –
प प – प –	– –	म प –	$\underline{\text{ग}}$ – म –
ह रि – सों –	– –	जो – –	रि – स –
प प – नि –	सां रें	सां नि सां	$\underline{\text{ध}}$ प म प
ब नि – सों –	– –	तो – –	यों – – –

अंतरा

×	२	०	३
प – – प –	प –	म॑ प म	$\underline{\text{ग}}$ – म –
ना – – च –	न –	च्यो – –	त – ब –
प नि – सां –	सां रें	सां नि –	सां – सां –
घूं – – घ –	ट –	के – –	सो – – –
$\underline{\text{गं}}$ – – $\underline{\text{गं}}$ –	गं –	रें रें –	सां – सां –
लो – – क –	ला –	– ज –	ड – र –

नि नि – सां –	रें –	सां नि –	ध प म प
प ट – कि –	पि –	छो – –	यौं – – –

सांचारी

×	२	०	३
ध – – ध –	ध –	नि ध –	प – प –
आ – – गें –	– –	पा – –	छें – सों –
म ग – म –	म –	प ग –	रे – सा –
– च – मि –	ट्यो –	जि य –	को – – –
नि सा – म –	म –	प प –	ग – म –
बा – – ट –	मां –	– झ –	म – टु –
प नि – ध प	म प	म ग –	रे – सा –
का – – ले –	– –	फो – –	यौं – – –

कह—नो— — —होइ—सो— — —कहो— — —स—खी—री— — —
क हा — — —भ—यो— —का— — —हू— — मु—ख—मो— —यों— — —

''आभोग अंतरानुसार''

राग धनाश्री—ताल धमार

मनहर ले गये नंदकुमार ।
बारक दृष्टि परी चरनन तन, देखन पायो बदन सुचार ॥१॥
हों अपने घर सुचसों बेठी पोवत ही मोतिन के हार ।
कांकरि डार द्वार व्हे निकसे बिसर गयो तन करत सिंगार ॥२॥
कहारी करों क्यों मिल हैं गिरिधर, किहि मिस हों जसोदाघर जाऊं ।
'परमानंद'प्रभु ठगीरी अचानक, मदनगोपाल भावतों नाऊं ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
नि	नि	नि	सां	–	सां	रेंसां	नि	ध	प	म	ग	म	प
ले	ग	ये	नं	–	द	कु–	मा	–	र	म	न	ह	र
नि	ध	प	म	ग	म	प	मग	रे	सा	नि	सा	ग	म
ले	ग	ये	नं	–	द	कु	मा–	–	र	म	न	ह	र

अंतरा

×					२		०			३			
प	प	प	मप	धप	ग	म	प	नि	नि	सां	रेंसां	नि	सां
बा	र	क	दृ–	––	ष्टि	प	री	च	र	न	न–	त	न
गं	गं	रेंसां	रें	नि	सां	–	निनि	सां	रें	सांनि	धप	ग	म
दे	ख	न–	पा	–	यो	–	बद	न	सु	चा–	––	–	र

संचारी

×					२		०			३			
ध	ध	ध	प	म	ग	म	प	नि	सां	नि	ध	प	–
हों	अ	प	ने	–	घ	र	सुचि	सों	–	वे	–	ठी	–
नि	ध	प	म	–	म	प	गग	म	प	म	ग	रे	सा
पो	व	त	ही	–	मो	–	तिन	के	–	हा	–	–	र

"आभोग अन्तरानुसार"

राग आसावरी–ताल त्रिताल (मध्यलय)

ग्वालिन कृष्णदरस सों अटकी ।
बार बार पनघट पर आवत, सिर जमुनाजल–मटकी ॥१॥

मनमोहनको रूपसुधानिधि, पीवत प्रेमरस गटकी ।
'कृष्णदास' धनि धन्य राधिका, लोक लाज सब पटकी ॥२॥

स्थायी

×				२				०				३			
												रे	म	प	सां
												ग्वा	–	लि	न
ध	–	प	प	ध	म	पध	मप	ग	ग	रे	सा	रे	म	प	सां
कृ	–	ष्ण	द	र	स	सों-	––	अ	ट	की	–	ग्वा	–	लि	न
गं	–	गं	गं	रें	रें	सां	–	रें	नि	ध	प	ध	म	प	सां
कृ	–	ष्ण	द	र	स	सों	–	अ	ट	की	–	ग्वा	–	लि	न

अन्तरा

×				२				०				३			
म	–	प	ध	–	ध	नि	ध	सां	सां	सां	सां	रें	नि	सां	सां
बा	–	र	बा	–	र	प	न	घ	ट	प	र	आ	–	व	त
गं	गं	रें	रें	सां	नि	रें	सां	ध	नि	ध	प	ध	म	प	सां
सि	र	ज	मु	ना	–	ज	ल	म	ट	की	–	ग्वा	–	लि	न

संचारी

×	२	०	३
ध ध ध –	नि ध प –	ध म पध मप	ग – रे सा
म न मो –	ह न को –	रू – प– सु–	धा – नि धि
रे – सा सा	रे म प प	ध ध निं ध	पम रेम प –
पो – व त	प्रे – म र	– स ग ट	की- -- – –

आभोग

×	२	०	३
म – प ध	– ध नि ध	सां – सां सांरें	गं रें सां –
कृ – ष्ण दा	– स ध न्य	ध – न्य रा-	– धि का –
गं – रें सां	नि नि सांरें निसां	ध धनि ध प	ध म प सां
लो – क ला	– ज स- ब–	प ट– की –	ग्वा – लि न

राग आसावरी—ताल धमार

मेरो माई ! हरि नागर सों नेह ॥
जब तें द्रष्टि परि नंदनंदन तब तें बिसरयो गेह ॥१॥
कोउ निंदों कोउ बंदों मो मन गयो संदेह ॥
सरिता सिंधु मिली 'परमानंद' भयो एक रस नेह ॥२॥

स्थायी

३	×	२	०
पध म प ध	सां सां सां रें नि	सांरें निसां	नि ध प
मे– रो मा इ	ह रि ना ग र	सो –	ने – ह

रे म प सां	ध प प ध म	पध मप	ग रे सा
मे रो मा इ	ह रि ना ग र	सो– ––	ने – ह

अंतरा

×	२	०	३
म प प ध –	नि ध	सां सां सां	रें नि सां सां
ज ब तें द्र –	ष्टि प	रि नं द	नं – द न
गं गं गं रें रें	सां –	रेंनि ध प	पध म प ध
त ब तें बि स	र्यो –	गे– – ह	मे– रो मा इ

संचारी

×	२	०	३
ध ध – ध –	प ध	नि नि –	ध – प –
को ऊ – निं –	दो –	को ऊ –	वं – दो –
ग रे सा रे म	प प	ध म प	ग – रे सा
मो म न ग यो	– सां	दे – –	– – ह –

स रि ता सिं–धु मि ली प र मा–नं द,
भ यो–ए क र स ने–ह मे रो मा इ,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग टोडी ताल–तीव्रा

जेंवत दोऊ रंगभरे ।
चारि भांतिके व्यंजन आने, खटरस रुचिर करें ॥१॥

गोपीजनके मंडल शजत, लोकवेद बिसरें ।
सकल मनोरथ पूरक नंदनंदन, प्रति प्रति रुप धरें ॥२॥
बासर केलि मुदित गिरिधारी, सुख बिलसत सगरें ॥
'लालदास' प्रभु यह विधि क्रीडत, भोजन अखिल करें ॥३॥

स्थायी

२	३	×	२	३	×
म ग	म प	ध प प	म ग	मप धम	ग रे सा
जें –	व त	दो – उ	रं –	ग– म–	रे – –

अंतरा

×	२	३	×	२	३
प ग म	ध नि	सां सां	ध नि सां	गं रें	सां –
चा – र	भा –	त के	ब्यं ज न	आ –	ने –
निध प प	ग म	प ध	मग रे सा	म ग	म प
खट र सा	रु चि	र क	र- – –	जें –	व त

संचारी

×	२	३	×	२	३
ध प –	ध प	प –	म ग ग	म ध	प प
गो पी –	ज न	के –	मं ड ल	रा –	ज त
म ग ग	रे ग	रे सा	नि सा –	ग –	रे सा
लो – क	वे –	– द	बि सा –	रे –	– –

सक ल म नो र थ पू र क नंद नं – दन

प्रति प्रति रु – प ध रें – – जें – वत

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सारंग–ताल त्रिताल

छाक ले आइ ग्वालिन गोरी ।
जसुमति सब पकवान छाव भरि, पठइ टेरत भोरी ॥१॥
जवही आनि अरोगत प्यारो, गोरस कनक कमोरी ।
'ब्रजाधीस' प्रभु स्यामढाक तर, भली बनी यह जोरी ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	नि –	सां –	सां सांरें	नि –	म प	नि –	नि सां
आ –	इ –	ग्वा –	लि न–	गो –	री –	छा –	क ले
रें –	सां –	नि –	प म	नि –	पम पम	रे –	नि सा
आ –	इ –	ग्वा –	लि न	गो –	–– ––	री –	– –

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
म प	नि नि	सां सां	नि सां	निसां रेंमं	रें सां	रें नि	सां सां
ज सु	म ति	स ब	प क	वा– ––	न छा	– ब	भ रि
रें रें	रें –	सां –	सां सांरें	नि –	म प	नि –	नि सां
प ठ	इ –	टे –	र त–	भो –	री –	छा –	क लै

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि नि	नि –	सां –	सां सां	नि –	म प	नि –	सां –
ज ब	ही –	आ –	न अ	रो –	ग त	प्या –	रो –
नि –	प प	म म	रे सा	रे –	म रे	सा नि़	सा –
गो –	र स	क न	क क	मो –	– –	री –	– –

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३
रें रें	– सां	– सां	नि सां	रें मं	रें सां	रें नि	सां सां
ब्र जा	– धी	– स	प्र भु	स्या –	म ढा	– क	त र
नि नि	– नि	सां –	सां रें	नि –	म प	नि –	नि सां
भ ली	– ब	नी –	य ह	जो –	री –	छां –	क ले

राग सारंग—ताल त्रिताल (आठ मात्रा)

ब्रजजन लोचन ही को तारो ॥
सुनि जसुमति तेरो पूत सपूत यह, कुल दीपक उजियारो ॥१॥
धेनु चरावन जाति दूरि जब, होत भवन अति भारो ॥
धोख सुजीवनि प्रान हमारो, छिनु इत उत जिनि टारों ॥२॥
सात घोस गिरिराज धर्यौ कर, सात बरसको बारो ॥
'गोविंद' प्रभु चिरजीवो रानी तेरो सुत, गोप वंस रखवारो ॥३॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि –	नि नि	सां –	सां रें	नि –	म प	नि नि	सां सां
लो –	च न	ही –	को –	ता –	रो –	ब्र ज	ज न

रें -	रें रें	सां -	नि प	नि -	पम पम	रे -	नि सा
लो -	च न	ही -	को -	ता -	-- --	रे -	- -

अंतरा

×	२	०	३	×	२	०	३
रें रें	रें रें	मं मं	मं रें	रें -	सां सां	रें नि	सां सां
सु न	ज सु	म ति	ते रो	पू -	त स	पू त	य ह
रें रें	रें मं	रें सां	सां सांरें	नि -	म प	नि नि	सां सां
कु ल	दी -	प क	उ जि-	या -	रो -	ब्र ज	ज न

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३
नि -	नि नि	सां -	सां सांरें	नि -	म प	नि नि	सां सां
धे -	नु च	रा -	व न-	जा -	त दू	- रि	ज ब
रें -	रें रें	सां सां	नि प	नि -	पम प	म रे	नि सा
हो -	त भ	व न	अ ति	भा -	-- -	रो -	- -

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३
मं -	मं मं	मं रें	रें रें	रें रेंगं	रें सां	रें नि	सां -
धो -	ख स	जी -	व न	प्रा --	न ह	मा -	रो -

नि सां	रें मं	रें रें	सां सांरें	नि –	म प	नि नि	सां सां
छि न	इ त	उ त	जि न–	टा –	रो –	व्र ज	ज न

सा – त थो – स गि रि श – ज ध यौं – क र, सा – त
ब र स को – बा – – – रो – – –, (संचारी अनुसार)
गो – विं द प्र भु चि र जी यो रा नी ते रो सु त, गो – प
वं – स र ख वा – रो व्र ज ज न (आभोग अनुसार)

राग सारंग–ताल आडा चौताल

मोहन जेंवत छाक सलोंनी ॥
सखन सहित हुलसे दोऊ भैया, झपटत कर ले दोनी ॥१॥
आछे बिंजन बनें कोनके, चाहत हरिकी कोनी ॥
'परमानंद' प्रभु कहत सखनसों, पहिलें करि लेउ बोनी ॥२॥

स्थायी

२	३	×	२	३	×
नि प	मप नि	सां सां सां	नि पम	प निसां	रें नि सां
मो –	ह– न	जें व त	छा ––	क स–	लों – नी
नि प	मप नि	सां नि प	म रे	मप नि	पम रे सा
मो –	ह– न	जें व त	छा –	क– स	लों– – नी

अन्तरा

×	२	३	×	२	३
मप नि नि	सां सां	नि सां	रें मं रें	रेंसां नि	सां –
सख न स	हि त	हु ल	से दो ऊ	भै– –	या –

रेंरें नि सां	नि प	मप निसां	रें नि सां
झप ट त	क र	ले- --	दो - नी

संचारी

×	२	३	×	२	३
सां - सां	नि -	प प	म प प	नि नि	सां -
आ - छे	बिं -	ज न	ब ने को	- न	के -
नि प प	म रे	नि सा	म रे म	प -	- -
चा ह त	ह रि	की -	को - -	ना -	- -

आभोग

×	२	३	×	२	३
म प नि	सां सां	सां सां	निसां रें मं	रें रें	सां -
प र मा	नं द	प्र भु	कह त स	ख न	सों -
निनि प म	प नि	सां सां	रें नि सां	नि प	मप नि
पहि ले -	क र	ले उ	बो - नी	मो -	ह- न

राग सारंग—ताल चर्चरी

तरनि तनया तीर लाल गावत बने, अधर कर मुरलिका रत्न हाकट खची ॥
तेरे रस रसिक सिरमोर गिरिवरधरन, सुनहु चरचरी ताल राग सारंग सची ॥१॥
और अद्‌भुत देखि लेत अवघर तान, आन अनगति भई भ्रुकुटि भोहें नची ॥
सुरति मिलवत मधुप जूथ मधुपनि लिये,
तुव मान ओंट कित रहत सुंदर बची ॥२॥

सखी वचनामृत श्रवन पुट पान करि, मिलि नवरंग वर रूप मनमथ मची ॥
'कृष्णदासनि' नाथ को जु वैभव निरखि,
आन सुरपति सहित सुभग लज्जित सची ॥३॥

स्थायी

×			२		०		३		
नि	नि	सां	सां	सां	सांनि	सां	नि	प	प
त	र	नि	त	न	या–	–	ता	–	र
नि	प	प	प	म	रे	रे	रे	सा	–
ला	–	ल	गा	–	व	त	ब	ने	–
म	म	रे	प	प	नि	नि	म	प	–
अ	ध	र	क	र	मु	र	लि	का	–
रें	–	रें	सां	–	नि	प	नि	म	प
र	–	त्न	हा	–	क	ट	ख	ची	–

अंतरा

×			२		०		३		
रें	–	रें	रें	रें	मं	मं	मं	रें	रें
ते	–	रे	र	स	र	सि	क	सि	र
रें	–	रें	सां	सां	रें	रें	नि	सां	सां
मो	–	र	गि	रि	व	र	ध	र	न
नि	नि	नि	सां	सां	रें	सां	नि	–	प
सु	न	हूं	च	र	च	री	ता	–	ल

रें	–	रें	सांनि	सां	रें	सां	नि	म	प
रा	–	ग	सा–	–	रं	ग	स	ची	–

संचारी

×			२		०		३		
नि	–	प	प	प	नि	प	म	–	प
ओ	–	र	अ	द	भु	त	दे	–	खि
नि	–	सां	सां	सां	नि	प	प	–	प
ले	–	त	अ	व	घ	र	ता	–	न
सां	–	सां	नि	प	म	म	रे	सा	–
आ	–	न	अ	न	ग	ति	भ	ई	–
म	रे	म	प	–	नि	प	म	प	–
भ्र	कु	टि	भौं	–	हे	–	न	ची	–

सु र त मि ल व त म धु प, जू – थ म धु प नि लिं यें –,
तु व मा – न ओं – ट कि त, र ह त सुं – द र ब ची –,

"आभोग अन्तरानुसार"

राग सारग–ताल चौताल

दान घाटी छाक आई गोकुल तें कावरि भरि रांवलकी रावरेने राखी सब घेरि ॥ जानि तो तबे ही देहो नंद जू की आनि खेहों भोजन की

रही कछू चाखो एक बेरी ॥१॥ अति प्रवीन जान राय कनक बेला कर में लिये बाँटत मेवा मन प्रसन्न हेरत चहुँ फेरि ॥ सकल पाक परमानंद आरोगत परमानंद टोक करज सुबल टेरि टेरि ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	–	सां	नि	प	प	नि	प	प	म	प	प
दा	–	न	घा	–	टी	छा	–	क	आ	–	ई
म	रे	रे	रे	म	प	नि	प	म	रे	–	सा
गो	–	कु	ल	–	ते	का	व	रि	भ	–	रि
नि	सा	रे	रे	म	–	प	–	प	नि	म	प
रां	–	व	ल	की	–	रा	–	व	रे	–	ने
नि	–	सां	सां	–	सां	नि	पम	पम	रे	म	प
रा	–	खी	स	–	ब	घे	––	––	रि	–	–

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	प	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	–	सां
जा	–	–	नि	–	तो	त	बे	ही	दे	–	हो
नि	सां	सां	रें	–	रें	मं	रें	रें	सां	नि	प
नं	–	द	जु	–	की	आ	–	नि	खे	–	हो